

## ॥ श्री राम चरित मानस ॥

श्री गणेशाय नमः  
श्री जानकीवल्लभो विजयते  
श्री रामचरितमानस  
षष्ठ सोपान  
(लंकाकाण्ड)  
श्लोक

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं  
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।  
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं  
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥

शंखेन्द्राभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्मांम्बरं  
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम् ।  
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं  
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥ २ ॥

यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।  
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु मे ॥ ३ ॥

दो. लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चंड ।  
भजसि न मन तेहि राम को कालु जासु कोदंड ॥

सो. सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।  
अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु ॥  
सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह ।  
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भव सागर तरिहिं ॥

यह लघु जलधि तरत कति बारा । अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥  
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । सोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी ॥  
तब रिपु नारी रुदन जल धारा । भरेउ बहोरि भयउ तेहिं खारा ॥  
सुनि अति उकुति पवनसुत केरी । हरषे कपि रघुपति तन हेरी ॥  
जामवंत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥  
राम प्रताप सुमिरि मन माहीं । करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥  
बोलि लिए कपि निकर बहोरी । सकल सुनहु बिनती कछु मोरी ॥  
राम चरन पंकज उर धरहू । कौतुक एक भालु कपि करहू ॥  
धावहु मर्कट बिकट बरूथा । आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा ॥  
सुनि कपि भालु चले करि हूहा । जय रघुबीर प्रताप समूहा ॥

दो. अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ ।  
आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

सैल बिसाल आनि कपि देहीं । कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥  
देखि सेतु अति सुंदर रचना । बिहसि कृपानिधि बोले बचना ॥  
परम रम्य उत्तम यह धरनी । महिमा अमित जाइ नहिं बरनी ॥  
करिहुँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कल्पना ॥  
सुनि कपीस बहु दूत पठाए । मुनिबर सकल बोलि लै आए ॥  
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥  
सिव द्रोही मम भगत कहावा । सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा ॥  
संकर बिमुख भगति चह मोरी । सो नारकी मूढ़ मति थोरी ॥

दो. संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।  
ते नर करहि कलप भरि धोर नरक महुँ वास ॥ २ ॥

जे रामेस्वर दरसन करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥  
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि । सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥  
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि । भगति मोरि तेहि संकर देइहि ॥  
मम कृत सेतु जो दरसन करिही । सो बिनु श्रम भवसागर तरिही ॥  
राम बचन सब के जिय भाए । मुनिबर निज निज आश्रम आए ॥  
गिरिजा रघुपति के यह रीती । संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ॥  
बाँधा सेतु नील नल नागर । राम कृपाँ जसु भयउ उजागर ॥  
बूड़हिं आनहि बोरहिं जेई । भए उपल बोहित सम तेई ॥  
महिमा यह न जलधि कइ बरनी । पाहन गुन न कपिन्ह कइ करनी ॥  
दो० श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान ।

ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥ ३ ॥

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा ॥  
चली सेन कछु बरनि न जाई । गर्जहिं मर्कट भट समुदाई ॥  
सेतुबंध द्विग चढ़ि रघुराई । चितव कृपाल सिंधु बहुताई ॥  
देखन कहुँ प्रभु करुना कंदा । प्रगट भए सब जलचर बूदा ॥  
मकर नक्र नाना झष ब्याला । सत जोजन तन परम बिसाला ॥  
अइसेउ एक तिन्हहि जे खाही । एकन्ह के डर तेपि डेराही ॥  
प्रभुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे । मन हरषित सब भए सुखारे ॥  
तिन्ह की ओट न देखिअ बारी । मगन भए हरि रूप निहारी ॥  
चला कटकु प्रभु आयसु पाई । को कहि सक कपि दल विपुलाई ॥

दो. सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उड़ाहिं ।  
अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहि जाहिं ॥ ४ ॥

अस कौतुक बिलोकि द्वौ भाई । बिहंसि चले कृपाल रघुराई ॥  
सेन सहित उतरे रघुबीरा । कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ॥

सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकल कपिन्ह कहूँ आयसु दीन्हा ॥  
खाहु जाइ फल मूल सुहाए । सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाए ॥  
सब तरु फरे राम हित लागी । रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी ॥  
खाहिं मधुर फल बटप हलावहिं । लंका सन्मुख सिखर चलावहिं ॥  
जहँ कहूँ फिरत निसाचर पावहिं । घेरि सकल बहु नाच नचावहिं ॥  
दसनन्हि काटि नासिका काना । कहि प्रभु सुजसु देहिं तब जाना ॥  
जिन्ह कर नासा कान निपाता । तिन्ह रावनहि कही सब बाता ॥  
सुनत श्रवन बारिधि बंधाना । दस मुख बोलि उठा अकुलाना ॥

दो. बांध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।  
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥ ५ ॥

निज विकलता विचारि बहोरी । बिहँसि गयउ ग्रह करि भय भोरी ॥  
मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकही पाथोधि बंधायो ॥  
कर गहि पतिहि भवन निज आनी । बोली परम मनोहर बानी ॥  
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥  
नाथ बयरु कीजे ताही सो । बुधि बल सकिअ जीति जाही सो ॥  
तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥  
अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे । महाबीर दितिसुत संघारे ॥  
जेहिं बलि बाँधि सहजभुज मारा । सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ॥  
तासु विरोध न कीजिअ नाथा । काल करम जिव जाकें हाथा ॥

दो. रामहि सौपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।  
सुत कहूँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथ दीनदयाल रघुराई । बाघउ सनमुख गएँ न खाई ॥  
चाहिअ करन सो सब करि बीते । तुम्ह सुर असुर चराचर जीते ॥  
संत कहहिं असि नीति दसानन । चौथेंपन जाइहि नृप कानन ॥  
तासु भजन कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥  
सोइ रघुवीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥  
मुनिबर जतनु करहिं जेहिं लागी । भूप राजु तजि होहिं बिरागी ॥  
सोइ कोसलधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दायो ॥  
जौ पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

दो. अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।  
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात ॥ ७ ॥

तब रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ॥  
सुनु तै प्रिया बृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥  
बरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥  
देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥  
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई । सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥  
मंदोदरी हृदयँ अस जाना । काल बस्य उपजा अभिमाना ॥  
सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहि बूझा । करव कवन बिधि रिपु सैं जूझा ॥  
कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥  
कहहु कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दो. सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।  
निति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥

कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥  
बारिधि नाधि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सबु गावा ॥  
छुधा न रही तुम्हहि तब काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥  
सुनत नीक आगें दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥  
जेहिं बारीस बंधायउ हेला । उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥  
सो भनु मनुज खाब हम भाई । बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥  
तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥  
प्रिय बानी जे सुनिहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥  
बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनिहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥  
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥

दो. नारि पाइ फिरि जाहिं जौ तौ न बढ़ाइअ रारि ।  
नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥

यह मत जौ मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥  
सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई ॥  
अबहीं ते उर संसय होई । बेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥  
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥  
हित मत तोहि न लागत कैसें । काल बिबस कहूँ भेषज जैसें ॥  
संध्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥  
लंका सिखर उपर आगारा । अति बिचित्र तहँ होइ अखारा ॥  
बैठ जाइ तेही मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥  
बाजहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना ॥

दो. सुनासीर सत सरिस सो संतत करइ बिलास ।  
परम प्रबल रिपु सीस पर तद्यपि सोच न त्रास ॥ १० ॥

इहाँ सुबेल सैल रघुवीरा । उतरे सेन सहित अति भीरा ॥  
सिखर एक उतंग अति देखी । परम रम्य सम सुभ्र बिसेषी ॥  
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाए । लच्छिमन रचि निज हाथ डसाए ॥  
ता पर रूचिर मृदुल मृगछाला । तेहीं आसान आसीन कृपाला ॥  
प्रभु कृत सीस कपीस उछंग्गा । बाम दहिन दिसि चाप निषंग्गा ॥  
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना । कह लंकेस मंत्र लगी काना ॥  
बड़भागी अंगद हनुमाना । चरन कमल चापत बिधि नाना ॥  
प्रभु पाछें लच्छिमन वीरासन । कटि निषंग कर बान सरासन ॥

दो. एहि बिधि कृपा रूप गुन धाम रामु आसीन ।  
धन्य ते नर एहिं ध्यान जे रहत सदा लयलीन ॥ ११(क) ॥

पूरब दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मंयक ।  
कहत सबहि देखहु ससिहि मृगपति सरिस असंक ॥ ११(ख) ॥

पूरब दिसि गिरिगुहा निवासी । परम प्रताप तेज बल रासी ॥  
 मत्त नाग तम कुंभ बिदारी । ससि केसरी गगन बन चारी ॥  
 बियुरे नभ मुकुताहल तारा । निसि सुंदरी केर सिंगारा ॥  
 कह प्रभु ससि महुँ मेचकताई । कहहु काह निज निज मति भाई ॥  
 कह सुगीव सुनहु रघुराई । ससि महुँ प्रगट भूमि कै झाँई ॥  
 मारेउ राहु ससिहि कह कोई । उर महुँ परी स्यामता सोई ॥  
 कोउ कह जब बिधि रति मुख कीन्हा । सार भाग ससि कर हरि लीन्हा ॥  
 छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं । तेहि मग देखिअ नभ परिछाहीं ॥  
 प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा । अति प्रिय निज उर दीन्ह बसेरा ॥  
 विष संजुत कर निकर पसारी । जारत विरहवंत नर नारी ॥

दो. कह हनुमंत सुनहु प्रभु ससि तुम्हारा प्रिय दास ।  
 तव मूरति बिधु उर बसति सोइ स्यामता अभास ॥१२(क) ॥

नवान्हपारायण ॥ सातवाँ विश्राम  
 पवन तनय के बचन सुनि बिहँसे रामु सुजान ।  
 दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु बोले कृपा निधान ॥१२(ख) ॥

देखु बिभीषन दच्छिन आसा । घन घमंड दामिनि बिलासा ॥  
 मधुर मधुर गरजइ घन घोरा । होइ वृष्टि जनि उपल कठोरा ॥  
 कहत बिभीषन सुनहु कृपाला । होइ न तड़ित न बारिद माला ॥  
 लंका सिखर उपर आगारा । तहुँ दसकंधर देख अखारा ॥  
 छत्र मेघडंबर सिर धारी । सोइ जनु जलद घटा अति कारी ॥  
 मंदोदरी श्रवन ताटंका । सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका ॥  
 बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा ॥  
 प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना । चाप चढ़ाई बान संधाना ॥

दो. छत्र मुकुट ताटंक तब हते एकहीं बान ।  
 सबके देखत महि परे मरमु न कोऊ जान ॥१३(क) ॥

अस कौतुक करि राम सर प्रविसेउ आइ निषंग ।  
 रावन सभा ससंक सब देखि महा रसभंग ॥१३(ख) ॥

कंप न भूमि न मरुत बिसेषा । अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा ॥  
 सोचहिं सब निज हृदय मझारी । असगुन भयउ भयंकर भारी ॥  
 दसमुख देखि सभा भय पाई । बिहसि बचन कह जुगुति बनाई ॥  
 सिरउ गिरे संतत सुभ जाही । मुकुट परे कस असगुन ताही ॥  
 सयन करहु निज निज गृह जाई । गवने भवन सकल सिर नाई ॥  
 मंदोदरी सोच उर बसेऊ । जब ते श्रवनपूर महि खसेऊ ॥  
 सजल नयन कह जुग कर जोरी । सुनहु प्रानपति विनती मोरी ॥  
 कंत राम बिरोध परिहरहू । जानि मनुज जनि हठ मन धरहू ॥

दो. बिस्वरुप रघुवंस मनि करहु बचन बिस्वासु ।  
 लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥१४ ॥

पद पाताल सीस अज धामा । अपर लोक अँग अँग विश्रामा ॥

भृकुटि बिलास भयंकर काला । नयन दिवाकर कच घन माला ॥  
 जासु घन अस्विनीकुमारा । निसि अरु दिवस निमेष अपारा ॥  
 श्रवन दिसा दस बेद बखानी । मारुत स्वास निगम निज बानी ॥  
 अधर लोभ जम दसन कराला । माया हास बाहु दिगपाला ॥  
 आनन अनल अंबुपति जीहा । उतपति पालन प्रलय समीहा ॥  
 रोम राजि अष्टादस भारा । अस्थि सैल सरिता नस जारा ॥  
 उदर उदधि अधगो जातना । जगमय प्रभु का बहु कल्पना ॥

दो. अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान ।  
 मनुज बास सचराचर रुप राम भगवान ॥१५ क ॥

अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ ।  
 प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ ॥१५ ख ॥

बिहँसा नारि बचन सुनि काना । अहो मोह महिमा बलवाना ॥  
 नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ॥  
 साहस अनृत चपलता माया । भय अबिबेक असौच अदाया ॥  
 रिपु कर रुप सकल तैं गावा । अति बिसाल भय मोहि सुनावा ॥  
 सो सब प्रिया सहज बस मोरें । समुझि परा प्रसाद अब तोरें ॥  
 जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई । एहि बिधि कहहु मोरि प्रभुताई ॥  
 तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि । समुझत सुखद सुनत भय मोचनि ॥  
 मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ । पियहि काल बस मतिभ्रम भयऊ ॥

दो. एहि बिधि करत विनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध ।  
 सहज असंक लंकपति समौ गयउ मद अंध ॥१६(क) ॥

सो. फूलह फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।  
 मूरुख हृदयँ न चेत जौ गुर मिलहिं विरंचि सम ॥१६(ख) ॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बोलाई ॥  
 कहहु बेगि का करिअ उपाई । जामवंत कह पद सिरु नाई ॥  
 सुनु सर्वग्य सकल उर बासी । बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ॥  
 मंत्र कहउँ निज मति अनुसार । दूत पठाइअ बालिकुमारा ॥  
 नीक मंत्र सब के मन माना । अंगद सन कह कृपानिधाना ॥  
 बालितनय बुधि बल गुन धामा । लंका जाहु तात मम कामा ॥  
 बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ । परम चतुर मै जानत अहऊँ ॥  
 काजु हमार तासु हित होई । रिपु सन करेहु बतकही सोई ॥

सो. प्रभु अग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।  
 सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु ॥१७(क) ॥

स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहि आदरु दियउ ।  
 अस बिचारि जुबराज तन पुलकित हरषित हियउ ॥१७(ख) ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई ॥

प्रभु प्रताप उर सहज असंका । रन बाँकुरा बालिसुत बंका ॥  
 पुर पैठत रावन कर बेटा । खेलत रहा सो होइ गै भैंटा ॥  
 बातहिं बात करष बद्धि आई । जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई ॥  
 तेहि अंगद कहुँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई ॥  
 निसिचर निकर देखि भट भारी । जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥  
 एक एक सन मरमु न कहहीं । समुझि तासु बध चुप करि रहहीं ॥  
 भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जेहीं जारी ॥  
 अब धौ कहा करिहि करतारा । अति समीत सब करहिं विचारा ॥  
 विनु पूछें मगु देहिं दिखाई । जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई ॥

दो. गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज ।  
 सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज ॥ १८ ॥

तुरत निसाचर एक पठावा । समाचार रावनहि जनावा ॥  
 सुनत बिहँसि बोला दससीसा । आनहु बोलि कहाँ कर कीसा ॥  
 आयसु पाइ दूत बहु धाए । कपिकुंजरहि बोलि लै आए ॥  
 अंगद दीख दसानन बैसैं । सहित प्रान कज्जलगिरि जैसैं ॥  
 भुजा बिटप सिर संग समाना । रोमावली लता जनु नाना ॥  
 मुख नासिका नयन अरु काना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना ॥  
 गयउ सभाँ मन नेकु न मुरा । बालितनय अतिबल बाँकुरा ॥  
 उठे सभासद कपि कहुँ देखी । रावन उर भा क्रौध बिसेषी ॥

दो. जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ ।  
 राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभाँ सिरु नाइ ॥ १९ ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर । मै रघुबीर दूत दसकंधर ॥  
 मम जनकहि तोहि रही मिताई । तव हित कारन आयउँ भाई ॥  
 उत्तम कुल पुलस्तिक कर नाती । सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥  
 बर पायहु कीन्हेहु सब काजा । जीतेहु लोकपाल सब राजा ॥  
 नृप अभिमान मोह बस किंबा । हरि आनिहु सीता जगदंबा ॥  
 अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा । सब अपराध छूमिहि प्रभु तोरा ॥  
 दसन गहहु तून कंठ कुठारी । परिजन सहित संग निज नारी ॥  
 सादर जनकसुता करि आगें । एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें ॥

दो. प्रनतपाल रघुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि ।  
 आरत गिरा सुनत प्रभु अभय करैगो तोहि ॥ २० ॥

रे कपिपोत बोलु संभारी । मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ॥  
 कहु निज नाम जनक कर भाई । केहि नातें मानिए मिताई ॥  
 अंगद नाम बालि कर बेटा । तासों कबहुँ भई ही भेटा ॥  
 अंगद बचन सुनत सकुचाना । रहा बालि बानर मै जाना ॥  
 अंगद तहीं बालि कर बालक । उपजेहु बंस अनल कुल घालक ॥  
 गर्भ न गयहु व्यर्थ तुम्ह जायहु । निज मुख तापस दूत कहायहु ॥  
 अब कहु कुसल बालि कहँ अहई । बिहँसि बचन तब अंगद कहई ॥  
 दिन दस गएँ बालि पहिं जाई । बूझेहु कुसल सखा उर लाई ॥  
 राम बिरोध कुसल जसि होई । सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥

सुनु सठ भेद होइ मन ताकें । श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाकें ॥

दो. हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस ।  
 अंधउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस ॥ २१ ॥

सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई । चाहत जासु चरन सेवकाई ॥  
 तासु दूत होइ हम कुल बोरा । अइसिहुँ मति उर बिहर न तोरा ॥  
 सुनि कठोर बानी कपि केरी । कहत दसानन नयन तरेरी ॥  
 खल तव कठिन बचन सब सहऊँ । नीति धर्म मै जानत अहऊँ ॥  
 कह कपि धर्मसीलता तोरी । हमहुँ सुनि कृत पर त्रिय चोरी ॥  
 देखी नयन दूत रखवारी । बूड़ि न मरहु धर्म व्रतधारी ॥  
 कान नाक विनु भगिनि निहारी । छमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी ॥  
 धर्मसीलता तव जग जागी । पावा दरसु हमहुँ बड़भागी ॥

दो. जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु ।  
 लोकपाल बल विपुल ससि ग्रसन हेतु सब राहु ॥ २२(क) ॥

पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि बास ।  
 सोभत भयउ मराल इव संभु सहित कैलास ॥ २२(ख) ॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । मो सन भिरिहि कवन जोधा बद ॥  
 तव प्रभु नारि बिरहँ बलहीना । अनुज तासु दुख दुखी मलीना ॥  
 तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥  
 जामवंत मंत्री अति बूढ़ा । सो कि होइ अब समरारूढ़ा ॥  
 सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला । है कपि एक महा बलसीला ॥  
 आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा । सुनत बचन कह बालिकुमारा ॥  
 सत्य बचन कहु निसिचर नाहा । साँचेहुँ कीस कीन्ह पुर दाहा ॥  
 रावन नगर अल्प कपि दहई । सुनि अस बचन सत्य को कहई ॥  
 जो अति सुभट सराहेहु रावन । सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥  
 चलइ बहुत सो बीर न होई । पठवा खबरि लेन हम सोई ॥

दो. सत्य नगरु कपि जारेउ विनु प्रभु आयसु पाइ ।  
 फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहिं भय रहा लुकाइ ॥ २३(क) ॥

सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह ।  
 कोउ न हमारें कटक अस तो सन लरत जो सोह ॥ २३(ख) ॥

प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि ।  
 जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ॥ २३(ग) ॥

जद्यपि लघुता राम कहुँ तोहि बधेँ बड़ दोष ।  
 तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्र जाति कर रोष ॥ २३(घ) ॥

बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस ।  
 प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहुँ काढ़त भट दससीस ॥ २३(ङ) ॥

हँसि बोलेउ दसमौलि तब कपि कर बड़ गुन एक ।  
जो प्रतिपालइ तासु हित करइ उपाय अनेक ॥ २३(छ) ॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा । जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥  
नाचि कूदि करि लोग रिझाई । पति हित करइ धर्म निपुनाई ॥  
अंगद स्वामिभक्त तव जाती । प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती ॥  
मैं गुन गाहक परम सुजाना । तव कटु रटनि करउँ नहिं काना ॥  
कह कपि तव गुन गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥  
बन बिधिसि सुत बधि पुर जारा । तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा ॥  
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई । दसकंधर मैं कीन्हि दिटाई ॥  
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा । तुम्हरेँ लाज न रोष न माखा ॥  
जौ असि मति पितु खाए कीसा । कहि अस बचन हँसा दससीसा ॥  
पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही । अबहीं समुझि परा कछु मोही ॥  
बालि बिमल जस भाजन जानी । हतउँ न तोहि अधम अभिमानी ॥  
कहु रावन रावन जग केते । मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते ॥  
बलिहि जितन एक गयउ पताला । राखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला ॥  
खेलहिं बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ॥  
एक बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा ॥  
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥

दो. एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि की काँख ।  
इन्ह महुँ रावन तैं कवन सत्य बदहि तजि माख ॥ २४ ॥

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुज लीला ॥  
जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥  
सिर सरोज निज करन्हि उतारी । पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी ॥  
भुज बिक्रम जानहिं दिगपाला । सठ अजहूँ जिन्ह कें उर साला ॥  
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । जब जब भिरउँ जाइ बरिआई ॥  
जिन्ह के दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इव टूटे ॥  
जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ॥  
सोइ रावन जग बिदित प्रतापी । सुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी ॥

दो. तेहि रावन कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान ।  
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ग्यान ॥ २५ ॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥  
सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ॥  
जासु परसु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगनित बहु बारा ॥  
तासु गर्ब जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दससीस अभागा ॥  
राम मनुज कस रे सठ बंगा । धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ॥  
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्न दान अरु रस पीयूषा ॥  
बैनतेय खग अहि सहसानन । चिंतामनि पुनि उपल दसानन ॥  
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । लाभ कि रघुपति भगति अकुंठा ॥

दो. सेन सहित तब मान मथि बन उजारि पुर जारि ॥  
कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ॥ २६ ॥

सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिंधु रघुराई ॥  
जौ खल भएसि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥  
मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला । राम बयर अस होइहि हाला ॥  
तव सिर निकर कपिन्ह के आगे । परिहहिं धरनि राम सर लागे ॥  
ते तव सिर कंदुक सम नाना । खेलहिं भालु कीस चौगाना ॥  
जबहिं समर कोपहि रघुनायक । छुटिहहिं अति कराल बहु सायक ॥  
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । अस बिचारि भजु राम उदारा ॥  
सुनत बचन रावन परजरा । जरत महानल जनु घृत परा ॥

दो. कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सकारि ।  
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउँ चराचर झारि ॥ २७ ॥

सठ साखामृग जोरि सहाई । बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई ॥  
नाघहिं खग अनेक बारीसा । सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा ॥  
मम भुज सागर बल जल पूरा । जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा ॥  
बीस पयोधि अगाध अपारा । को अस बीर जो पाइहि पारा ॥  
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा । भूप सुजस खल मोहि सुनावा ॥  
जौ पै समर सुभट तव नाथा । पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा ॥  
तौ बसीठ पठवत केहि काजा । रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा ॥  
हरगिरि मथन निरखु मम बाहु । पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहु ॥

दो. सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस ।  
हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस ॥ २८ ॥

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला । बिधि के लिखे अंक निज भाला ॥  
नर कें कर आपन बध बाँची । हसेउँ जानि बिधि गिरा असाँची ॥  
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरे । लिखा बिरंचि जरत मति भोरे ॥  
आन बीर बल सठ मम आगे । पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागे ॥  
कह अंगद सलज्ज जग माहीं । रावन तोहि समान कोउ नाहीं ॥  
लाजवंत तव सहज सुभाऊ । निज मुख निज गुन कहसि न काऊ ॥  
सिर अरु सैल कथा चित रही । ताते बार बीस तैं कही ॥  
सो भुजबल राखेउ उर घाली । जीतेहु सहसबाहु बलि बाली ॥  
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा । काटेँ सीस कि होइअ सूरा ॥  
इंद्रजालि कहु कहिअ न बीरा । काटइ निज कर सकल सरीरा ॥

दो. जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खर बूंद ।  
ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद ॥ २९ ॥

अब जनि बतबदाव खल करही । सुनु मम बचन मान परिहरही ॥  
दसमुख मैं न बसीठी आयउँ । अस बिचारि रघुबीष पठायउँ ॥  
बार बार अस कहइ कृपाला । नहिं गजारि जसु बधेँ सूकाला ॥  
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे । सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे ॥  
नाहिं त करि मुख भंजन तोरा । लै जातेउँ सीतहि बरजोरा ॥  
जानेउँ तव बल अधम सुरारी । सूनेँ हरि आनिहि परनारी ॥  
तैं निसिचर पति गर्ब बहूता । मैं रघुपति सेवक कर दूता ॥

जौ न राम अपमानहि डरउँ। तोहि देखत अस कौतुक करउँ ॥

दो. तोहि पटक महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ।  
तव जुबतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ ॥ ३० ॥

जौ अस करौ तदपि न बड़ाई। मुएहि बधे नहिं कछु मनुसाई ॥  
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा। अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥  
सदा रोगबस संतत क्रोधी। बिष्णु बिमूख श्रुति संत बिरोधी ॥  
तनु पोषक निंदक अघ खानी। जीवन सव सम चौदह प्राणी ॥  
अस बिचारि खल बधउँ न तोही। अब जनि रिस उपजावसि मोही ॥  
सुनि सकोप कह निसिचर नाथा। अधर दसन दसि मीजत हाथा ॥  
रे कपि अधम मरन अब चहसी। छोटे बदन बात बड़ि कहसी ॥  
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके। बल प्रताप बुधि तेज न ताके ॥

दो. अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता बनबास।  
सो दुख अरु जुबती बिरह पुनि निसि दिन मम त्रास ॥ ३१(क) ॥

जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि अइसे मनुज अनेक।  
खाही निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक ॥ ३१(ख) ॥

जब तेहिं कीन्ह राम कै निंदा। क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा ॥  
हरि हर निंदा सुनइ जो काना। होइ पाप गोघात समाना ॥  
कटकटान कपिकुंजर भारी। दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ॥  
डोलत धरनि सभासद खसे। चले भाजि भय मारुत ग्रसे ॥  
गिरत सँभारि उठा दसकंधर। भूतल परे मुकुट अति सुंदर ॥  
कछु तेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे। कछु अंगद प्रभु पास पबारे ॥  
आवत मुकुट देखि कपि भागे। दिनहीं लूक परन बिधि लागे ॥  
की रावन करि कोप चलाए। कुलिस चारि आवत अति धाए ॥  
कह प्रभु हँसि जनि हृदयँ डेराहू। लूक न असनि केतु नहिं राहू ॥  
ए किरिटी दसकंधर केरे। आवत बालितनय के प्रेरे ॥

दो. तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास।  
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ॥ ३२(क) ॥

उहाँ सकोपि दसानन सब सन कहत रिसाइ।  
धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ ॥ ३२(ख) ॥

एहि बिधि बेगि सूभट सब धावहु। खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु ॥  
मर्कटहीन करहु महि जाई। जिअत धरहु तापस द्वौ भाई ॥  
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा ॥  
मरु गर काटि निलज कुलघाती। बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती ॥  
रे त्रिय चोर कुमारग गामी। खल मल रासि मंदमति कामी ॥  
सन्यपात जल्पसि दुर्बादा। भएसि कालबस खल मनुजादा ॥  
याको फलु पावहिगो आगे। बानर भालु चपेटन्हि लागे ॥  
रामु मनुज बोलत असि बानी। गिरहिं न तव रसना अभिमानी ॥  
गिरिहहिं रसना संसय नाही। सिरन्हि समेत समर महि माही ॥

सो. सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर।  
बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़ ॥ ३३(क) ॥

तब सोनित की प्यास तृषित राम सायक निकर।  
तजउँ तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम ॥ ३३(ख) ॥

मै तव दसन तोरिबे लायक। आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥  
असि रिस होति दसउ मुख तोरौ। लंका गहि समुद्र महँ बोरौ ॥  
गूलरि फल समान तव लंका। बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका ॥  
मैं बानर फल खात न बारा। आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥  
जुगति सुनत रावन मुसुकाई। मूढ़ सिखिहि कहँ बहुत झुटाई ॥  
बालि न कबहुँ गाल अस मारा। मिलि तपसिन्ह तैं भएसि लबारा ॥  
साँचेहुँ मैं लबार भुज बीहा। जौ न उपारिउँ तव दस जीहा ॥  
समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माझ पन करि पद रोपा ॥  
जौ मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी ॥  
सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥  
इंद्रजीत आदिक बलवाना। हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥  
झपटहिं करि बल विपुल उपाई। पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई ॥  
पुनि उठि झपटही सुर आराती। टरइ न कीस चरन एहि भाँती ॥  
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी। मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी ॥

दो. कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ।  
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिरु नाइ ॥ ३४(क) ॥

भूमि न छोड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग ॥  
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग ॥ ३४(ख) ॥

कपि बल देखि सकल हियँ हारे। उठा आपु कपि के परचारे ॥  
गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा ॥  
गहसि न राम चरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥  
भयउ तेजहत श्री सब गई। मध्य दिवस जिमि ससि सोहई ॥  
सिंघासन बैठेउ सिरु नाई। मानहुँ संपति सकल गँवाई ॥  
जगदातमा प्रानपति रामा। तासु बिमुख किमि लह बिश्रामा ॥  
उमा राम की भूकुटि बिलासा। होइ बिस्व पुनि पावइ नासा ॥  
तून ते कुलिस कुलिस तून करई। तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥  
पुनि कपि कही नीति बिधि नाना। मान न ताहि कालु निअराना ॥  
रिपु मद मधि प्रभु सुजसु सुनायो। यह कहि चल्यो बालि नृप जायो ॥  
हतौ न खेत खेलाइ खेलाई। तोहि अबहिं का करौ बड़ाई ॥  
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा। सो सुनि रावन भयउ दुखारा ॥  
जातुधान अंगद पन देखी। भय ब्याकुल सब भए बिसेषी ॥

दो. रिपु बल धरषि हरषि कपि बालितनय बल पुंज।  
पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज ॥ ३५(क) ॥

साँझ जानि दसकंधर भवन गयउ बिलखाइ।

मंदोदरी रावनहि बहुरि कहा समुझाइ ॥ (ख) ॥  
 कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही ॥  
 रामानुज लघु रेख खचाई । सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई ॥  
 पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा । जाके दूत केर यह कामा ॥  
 कौतुक सिंधु नाधी तव लंका । आयउ कपि केहरी असंका ॥  
 रखवारे हति विपिन उजारा । देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा ॥  
 जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा । कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा ॥  
 अब पति मृषा गाल जनि मारहु । मोर कहा कछु हृदयँ बिचारहु ॥  
 पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु । अग जग नाथ अतुल बल जानहु ॥  
 बान प्रताप जान मारीचा । तासु कहा नहिं मानेहि नीचा ॥  
 जनक सभाँ अगनित भूपाला । रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाला ॥  
 भंजि धनुष जानकी बिआही । तब संग्राम जितेहु किन ताही ॥  
 सुरपति सुत जानइ बल थोरा । राखा जिअत आँखि गहि फोरा ॥  
 सूपनखा कै गति तुम्ह देखी । तदपि हृदयँ नहिं लाज बिषेपी ॥

दो. बधि विराध खर दूषनहि लीलाँ हृत्यो कबंध ।  
 बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध ॥ ३६ ॥

जेहिं जलनाथ बंधायउ हेला । उतरे प्रभु दल सहित सुबेला ॥  
 कारुनीक दिनकर कुल केतू । दूत पठायउ तव हित हेतू ॥  
 सभा माझ जेहिं तव बल मथा । करि बरूथ महुँ मृगपति जथा ॥  
 अंगद हनुमत अनुचर जाके । रन बाँकुरे बीर अति बाँके ॥  
 तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू । मुधा मान ममता मद बहहू ॥  
 अहह कंत कृत राम विरोधा । काल बिबस मन उपज न बोधा ॥  
 काल दंड गहि काहु न मारा । हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा ॥  
 निकट काल जेहि आवत साई । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई ॥

दो. दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु ।  
 कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ विमल जसु लेहु ॥ ३७ ॥

नारि बचन सुनि बिसिख समाना । सभाँ गयउ उठि होत बिहाना ॥  
 बैठ जाइ सिंघासन फूली । अति अभिमान त्रास सब भूली ॥  
 इहाँ राम अंगदहि बोलावा । आइ चरन पंकज सिरु नावा ॥  
 अति आदर सपीप बैठारी । बोले बिहँसि कृपाल खरारी ॥  
 बालितनय कौतुक अति मोही । तात सत्य कहू पूछुँ तोही ॥ ।  
 रावनु जातुधान कुल टीका । भुज बल अतुल जासु जग लीका ॥  
 तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए । कहहु तात कवनी विधि पाए ॥  
 सुनु सर्वग्य प्रनत सुखकारी । मुकुट न होहिं भूप गुन चारी ॥  
 साम दान अरु दंड बिभेदा । नृप उर बसहिं नाथ कह बेदा ॥  
 नीति धर्म के चरन सुहाए । अस जियँ जानि नाथ पहिं आए ॥

दो. धर्महीन प्रभु पद विमुख काल बिबस दससीस ।  
 तेहि परिहरि गुन आए सुनहु कोसलाधीस ॥ ३८(((क) ॥

परम चतुरता श्रवन सुनि बिहँसे रामु उदार ।  
 समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार ॥ ३८(ख) ॥

रिपु के समाचार जब पाए । राम सचिव सब निकट बोलाए ॥  
 लंका बाँके चारि दुआरा । केहि विधि लागिअ करहु बिचारा ॥  
 तब कपीस रिच्छेस बिभीषन । सुमिरि हृदयँ दिनकर कुल भूषन ॥  
 करि बिचार तिन्ह मंत्र दूढावा । चारि अनी कपि कटकु बनावा ॥  
 जथाजोग सेनापति कीन्हे । जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ॥  
 प्रभु प्रताप कहि सब समुझाए । सुनि कपि सिंघनाद करि धाए ॥  
 हरषित राम चरन सिर नावहिं । गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं ॥  
 गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीसा । जय रघुबीर कोसलाधीसा ॥  
 जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले असंका ॥  
 घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी । मुखहिं निसान बजावही भेरी ॥

दो. जयति राम जय लच्छिमन जय कपीस सुग्रीव ।  
 गर्जहिं सिंघनाद कपि भालु महा बल सीव ॥ ३९ ॥

लंकाँ भयउ कोलाहल भारी । सुना दसानन अति अहँकारी ॥  
 देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई । बिहँसि निसाचर सेन बोलाई ॥  
 आए कीस काल के प्रेरे । छुधावंत सब निसिचर मेरे ॥  
 अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा । गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा ॥  
 सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥  
 उमा रावनहि अस अभिमाना । जिमि टिटिभ खग सूत उताना ॥  
 चले निसाचर आयसु मागी । गहि कर भिंडिपाल बर साँगी ॥  
 तोमर मुग्दर परसु प्रचंडा । सुल कृपान परिघ गिरिखंडा ॥  
 जिमि अरुनोपल निकर निहारी । धावहिं सठ खग मांस अहारी ॥  
 चोंच भंग दुख तिन्हहि न सूझा । तिमि धाए मनुजाद अबूझा ॥

दो. नानायुध सर चाप धर जातुधान बल बीर ।  
 कोट कँगूरन्हि चढ़ि गए कोटि कोटि रनधीर ॥ ४० ॥

कोट कँगूरन्हि सोहहिं कैसे । मेरु के सुंगनि जनु घन बैसे ॥  
 बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ ॥  
 बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर जाहिं दरारा ॥  
 देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठट्टा । अति बिसाल तनु भालु सुभट्टा ॥  
 धावहिं गनहिं न अवघट घाटा । पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा ॥  
 कटकटाहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं । दसन ओठ काटहिं अति तर्जहिं ॥  
 उत रावन इत राम दोहाई । जयति जयति जय परी लराई ॥  
 निसिचर सिखर समूह ढहावहिं । कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ॥

दो. धरि कुधर खंड प्रचंड कर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ।  
 झपटहिं चरन गहि पटक महि भजि चलत बहुरि पचारहीं ॥  
 अति तरल तरुन प्रताप तरपहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गए ।  
 कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ राम जसु गावत भए ॥

दो. एकु एकु निसिचर गहि पुनि कपि चले पराइ ।  
 ऊपर आपु हेठ भट गिरिहिं धरनि पर आइ ॥ ४१ ॥

राम प्रताप प्रबल कपिजूथा । मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा ॥  
 चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर । जय रघुबीर प्रताप दिवाकर ॥  
 चले निसाचर निकर पराई । प्रबल पवन जिमि घन समुदाई ॥  
 हाहाकार भयउ पुर भारी । रोवहिं बालक आतुर नारी ॥  
 सब मिलि देहिं रावनहि गारी । राज करत एहिं मृत्यु हँकारी ॥  
 निज दल बिचल सुनी तेहिं काना । फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥  
 जो रन बिमुख सुना मै काना । सो मै हतब कराल कृपाना ॥  
 सर्वसु खाइ भोग करि नाना । समर भूमि भए बल्लभ प्राना ॥  
 उग्र बचन सुनि सकल डेराने । चले क्रोध करि सुभट लजाने ॥  
 सन्मुख मरन बीर कै सोभा । तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥

दो. बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि ।  
 व्याकुल किए भालु कपि परिघ त्रिसूलन्हि मारी ॥ ४२ ॥

भय आतुर कपि भागन लागे । जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे ॥  
 कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता । कहँ नल नील दुबिद बलवंता ॥  
 निज दल बिकल सुना हनुमाना । पच्छिम द्वार रहा बलवाना ॥  
 मेघनाद तहँ करइ लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ॥  
 पवनतनय मन भा अति क्रोधा । गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा ॥  
 कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद कहँ धावा ॥  
 भंजेउ रथ सारथी निपाता । ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता ॥  
 दुसरें सूत बिकल तेहि जाना । स्यंदन घालि तुरत गृह आना ॥

दो. अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल ।  
 रन बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल ॥ ४३ ॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥  
 रावन भवन चढ़े द्वौ धाई । करहि कोसलाधीस दोहाई ॥  
 कलस सहित गहि भवनु ढहावा । देखि निसाचरपति भय पावा ॥  
 नारि बृंद कर पीटहिं छाती । अब दुइ कपि आए उतपाती ॥  
 कपिलीला करि तिन्हहि डेरावहिं । रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं ॥  
 पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा ॥  
 गर्जि परे रिपु कटक मझारी । लागे मदै भुज बल भारी ॥  
 काहुहि लात चपेटन्हि केहू । भजहु न रामहि सो फल लेहू ॥

दो. एक एक सों मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड ।  
 रावन आगें परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड ॥ ४४ ॥

महा महा मुखिआ जे पावहिं । ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥  
 कहइ बिभीषनु तिन्ह के नामा । देहिं राम तिन्हहू निज धामा ॥  
 खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । पावहिं गति जो जाचत जोगी ॥  
 उमा राम मृदुचित करुनाकर । बयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर ॥  
 देहिं परम गति सो जियै जानी । अस कृपाल को कहहु भवानी ॥  
 अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी । नर मतिमंद ते परम अभागी ॥  
 अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा । कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा ॥  
 लंकाँ द्वौ कपि सोहहिं कैसैं । मथहि सिंधु दुइ मंदर जैसैं ॥

दो. भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत ।  
 कूदे जुगल बिगत श्रम आए जहँ भगवंत ॥ ४५ ॥

प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए । देखि सुभट रघुपति मन भाए ॥  
 राम कृपा करि जुगल निहारे । भए बिगतश्रम परम सुखारे ॥  
 गए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥  
 जातुधान प्रदोष बल पाई । धाए करि दससीस दोहाई ॥  
 निसिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥  
 द्वौ दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिं मानहिं हारी ॥  
 महाबीर निसिचर सब कारे । नाना बरन बलीमुख भारे ॥  
 सबल जुगल दल समबल जोधा । कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥  
 प्राबिट सरद पयोद घनेरे । लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ॥  
 अनिप अकंपन अरु अतिकाया । बिचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥  
 भयउ निमिष महँ अति अंधियारा । बृष्टि होइ रुधरोपल छारा ॥

दो. देखि निबिड़ तम दसहुँ दिसि कपिदल भयउ खभार ।  
 एकहि एक न देखई जहँ तहँ करहिं पुकार ॥ ४६ ॥

सकल मरमु रघुनायक जाना । लिए बोलि अंगद हनुमाना ॥  
 समाचार सब कहि समुझाए । सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥  
 पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा । पावक सायक सपदि चलावा ॥  
 भयउ प्रकास कतहुँ तम नाही । ग्यान उदयँ जिमि संसय जाहीं ॥  
 भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । धाए हरष बिगत श्रम त्रासा ॥  
 हनुमान अंगद रन गाजे । हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥  
 भागत पट पटकहिं धरि धरनी । करहिं भालु कपि अडुत करनी ॥  
 गहि पद डारहिं सागर माहीं । मकर उरग झष धरि धरि खाहीं ॥

दो. कछु मारे कछु घायल कछु गढ़ चढ़े पराइ ।  
 गर्जहिं भालु बलीमुख रिपु दल बल बिचलाइ ॥ ४७ ॥

निसा जानि कपि चारिउ अनी । आए जहाँ कोसला धनी ॥  
 राम कृपा करि चितवा सबही । भए बिगतश्रम बानर तबही ॥  
 उहाँ दसानन सचिव हँकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥  
 आधा कटकु कपिन्ह संघारा । कहहु बेगि का करिअ बिचारा ॥  
 माल्यवंत अति जरठ निसाचर । रावन मातु पिता मंत्री बर ॥  
 बोला बचन नीति अति पावन । सुनहु तात कछु मोर सिखावन ॥  
 जब ते तुम्ह सीता हरि आनी । असगुन होहिं न जाहिं बखानी ॥  
 बेद पुरान जासु जसु गायो । राम बिमुख काहुँ न सुख पायो ॥

दो. हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।  
 जेहि मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान ॥ ४८(क) ॥

मासपारायण, पचीसवाँ विश्राम  
 कालरूप खल बन दहन गुनागार घनबोध ।  
 सिव बिरंचि जेहि सेवहिं तासों कवन बिरोध ॥ ४८(ख) ॥

परिहरि बयरु देहु वैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥  
ताके बचन बान सम लागे । करिआ मुह करि जाहि अभागे ॥  
बूढ़ भएसि न त मरतेउँ तोही । अब जनि नयन देखावसि मोही ॥  
तेहि अपने मन अस अनुमाना । बध्यो चहत एहि कृपानिधाना ॥  
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा । तब सकोप बोलेउ घननादा ॥  
कौतुक प्रात देखिअहु मोरा । करिहउँ बहुत कहौ का थोरा ॥  
सुनि सुत बचन भरोसा आवा । प्रीति समेत अंक बैठावा ॥  
करत बिचार भयउ भिनुसारा । लागे कपि पुनि चहूँ दुआरा ॥  
कोपि कपिन्ह दुर्घट गढु घेरा । नगर कोलाहलु भयउ घनेरा ॥  
बिबिधायुध धर निसिचर धाए । गढ़ ते पर्वत सिखर ढहाए ॥

छं. ढाहे महीधर सिखर कोटिन्ह विविध विधि गोला चले ।  
घहरात जिमि पबिपात गर्जत जनु प्रलय के बादले ॥  
मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर भए ।  
गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निसिचर हए ॥

दो. मेघनाद सुनि श्रवन अस गढु पुनि छेंका आइ ।  
उतर्यो बीर दुर्ग तें सन्मुख चलयो बजाइ ॥ ४९ ॥

कहँ कोसलाधीस द्वौ भ्राता । धन्वी सकल लोक बिख्याता ॥  
कहँ नल नील दुबिद सुग्रीवा । अंगद हनूमंत बल सींवा ॥  
कहाँ बिभीषनु भ्राताद्रोही । आजु सबहि हठि मारउँ ओही ॥  
अस कहि कठिन बान संधाने । अतिसय क्रोध श्रवन लगि ताने ॥  
सर समुह सो छाड़ै लागा । जनु सपच्छ धावहिं बहु नागा ॥  
जहँ तहँ परत देखिअहिं बानर । सन्मुख होइ न सके तेहि अवसर ॥  
जहँ तहँ भागि चले कपि रीछा । बिसरी सबहि जुद्ध कै ईछा ॥  
सो कपि भालु न रन महँ देखा । कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेषा ॥

दो. दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर ।  
सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल धीर ॥ ५० ॥

देखि पवनसुत कटक बिहाला । क्रोधवंत जनु धायउ काला ॥  
महासैल एक तुरत उपारा । अति रिस मेघनाद पर डारा ॥  
आवत देखि गयउ नभ सोई । रथ सारथी तुरग सब खोई ॥  
बार बार पचार हनुमाना । निकट न आव मरमु सो जाना ॥  
रघुपति निकट गयउ घननादा । नाना भाँति करेसि दुर्बादा ॥  
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे । कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे ॥  
देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना । करै लाग माया बिधि नाना ॥  
जिमि कोउ करै गरुड़ सै खेला । डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥

दो. जासु प्रबल माया बल सिव बिरंचि बड़ छोट ।  
ताहि दिखावइ निसिचर निज माया मति खोट ॥ ५१ ॥

नभ चढ़ि बरष बिपुल अंगारा । महि ते प्रगट होहिं जलधारा ॥  
नाना भाँति पिसाच पिसाची । मारु काटु धुनि बोलहिं नाची ॥

बिष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा । बरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा ॥  
बरषि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा । सूझ न आपन हाथ पसारा ॥  
कपि अकुलाने माया देखें । सब कर मरन बना एहि लेखें ॥  
कौतुक देखि राम मुसुकाने । भए सभित सकल कपि जाने ॥  
एक बान काटी सब माया । जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया ॥  
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके । भए प्रबल रन रहहिं न रोके ॥

दो. आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।  
लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ ॥ ५२ ॥

छतज नयन उर बाहु बिसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला ॥  
इहाँ दसानन सुभट पठाए । नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए ॥  
भूधर नख बिटपायुध धारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥  
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥  
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं ॥  
मारु मारु धरु धरु धरु मारु । सीस तोरि गहि भुजा उपारु ॥  
असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रंड प्रचंडा ॥  
देखहिं कौतुक नभ सुर वृंदा । कबहुँक बिसमय कबहुँ अनंदा ॥

दो. रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उड़ाइ ।  
जनु अंगार रासिन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाड़ि ॥ ५३ ॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥  
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा ॥  
एकहि एक सकइ नहिं जीती । निसिचर छल बल करइ अनीती ॥  
क्रोधवंत तब भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥  
नाना बिधि प्रहार कर सेषा । राच्छस भयउ प्रान अवसेषा ॥  
रावन सुत निज मन अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ॥  
बीरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ॥  
मुरुछा भई सक्ति के लागें । तब चलि गयउ निकट भय त्यागें ॥

दो. मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ ।  
जगदाधार सेष किमि उठै चले खिसिआइ ॥ ५४ ॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारइ भुवन चारिदस आसू ॥  
सक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥  
यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥  
संध्या भइ फिरि द्वौ बाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥  
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर ॥  
तब लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ॥  
जामवंत कह वैद सुषेना । लंकाँ रहइ को पठई लेना ॥  
धरि लघु रूप गयउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥

दो. राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन ।  
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभंजन सुत बल भाषी ॥  
 उहाँ दूत एक मरमु जनावा। रावन कालनेमि गृह आवा ॥  
 दसमुख कहा मरमु तेहिं सुना। पुनि पुनि कालनेमि सिरु धुना ॥  
 देखत तुम्हहि नगरु जेहिं जारा। तासु पंथ को रोकन पारा ॥  
 भजि रघुपति करु हित आपना। छाँड़हु नाथ मृषा जल्पना ॥  
 नील कंज तनु सुंदर स्यामा। हृदयँ राखु लोचनाभिरामा ॥  
 मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू। महा मोह निसि सूतत जागू ॥  
 काल ब्याल कर भच्छक जोई। सपनेहुँ समर कि जीतिअ सोई ॥

दो. सुनि दसकंठ रिसान अति तेहिं मन कीन्ह बिचार।  
 राम दूत कर मरौ बरु यह खल रत मल भार ॥ ५६ ॥

अस कहि चला रचिसि मग माया। सर मंदिर बर बाग बनाया ॥  
 मारुतसुत देखा सुभ आश्रम। मुनिहि बूझि जल पियौ जाइ श्रम ॥  
 राच्छस कपट बेष तहँ सोहा। मायापति दूतहि चह मोहा ॥  
 जाइ पवनसुत नायउ माथा। लाग सो कहै राम गुन गाथा ॥  
 होत महा रन रावन रामहिं। जितहहिं राम न संसय या महिं ॥  
 इहाँ भएँ मैं देखेउँ भाई। ग्यान दृष्टि बल मोहि अधिकाई ॥  
 मागा जल तेहिं दीन्ह कमंडल। कह कपि नहिं अघाउँ थोरें जल ॥  
 सर मज्जन करि आतुर आवहु। दिच्छा देउँ ग्यान जेहिं पावहु ॥

दो. सर पैठत कपि पद गहा मकरी तब अकुलान।  
 मारी सो धरि दिव्य तनु चली गगन चढ़ि जान ॥ ५७ ॥

कपि तव दरस भइउँ निष्पापा। मिटा तात मुनिबर कर सापा ॥  
 मुनि न होइ यह निसिचर घोरा। मानहु सत्य बचन कपि मोरा ॥  
 अस कहि गई अपछरा जबहीं। निसिचर निकट गयउ कपि तबहीं ॥  
 कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू। पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू ॥  
 सिर लंगूर लपेटि पछारा। निज तनु प्रगटेसि मरती बारा ॥  
 राम राम कहि छाड़ेसि प्राना। सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना ॥  
 देखा सैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥  
 गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ। अवधपुरी उपर कपि गयऊ ॥

दो. देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि।  
 बिनु फर सायक मारेउ चाप श्रवन लगि तानि ॥ ५८ ॥

परेउ मुरुछि महि लागत सायक। सुमिरत राम राम रघुनायक ॥  
 सुनि प्रिय बचन भरत तब धाए। कपि समीप अति आतुर आए ॥  
 बिकल बिलोकि कीस उर लावा। जागत नहिं बहु भौंति जगावा ॥  
 मुख मलीन मन भए दुखारी। कहत बचन भरि लोचन बारी ॥  
 जेहिं बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा। तेहिं पुनि यह दारुन दुख दीन्हा ॥  
 जौ मोरें मन बच अरु काया। प्रीति राम पद कमल अमाया ॥  
 तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला। जौ मो पर रघुपति अनुकूला ॥  
 सुनत बचन उठि बैठ कपीसा। कहि जय जयति कोसलाधीसा ॥

सो. लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तनु लोचन सजल।

प्रीति न हृदयँ समाइ सुमिरि राम रघुकुल तिलक ॥ ५९ ॥

तात कुसल कहु सुखनिधान की। सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥  
 कपि सब चरित समास बखाने। भए दुखी मन महुँ पछिताने ॥  
 अहह दैव मैं कत जग जायउँ। प्रभु के एकहु काज न आयउँ ॥  
 जानि कुअवसरु मन धरि धीरा। पुनि कपि सन बोले बलबीरा ॥  
 तात गहरु होइहि तोहि जाता। काजु नसाइहि होत प्रभाता ॥  
 चढु मम सायक सैल समेता। पठवौ तोहि जहँ कृपानिकेता ॥  
 सुनि कपि मन उपजा अभिमाना। मोरें भार चलिहि किमि बाना ॥  
 राम प्रभाव बिचारि बहोरी। बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥

दो. तव प्रताप उर राखि प्रभु जेहउँ नाथ तुरंत।  
 अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत ॥ ६०(क) ॥

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।  
 मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार ॥ ६०(ख) ॥

उहाँ राम लछिमनहिं निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी ॥  
 अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ ॥  
 सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥  
 मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता ॥  
 सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ॥  
 जौ जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू ॥  
 सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥  
 अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ॥  
 जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना ॥  
 अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौ जइ दैव जिआवै मोही ॥  
 जैहउँ अवध कवन मुहु लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई ॥  
 बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं ॥  
 अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ॥  
 निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ॥  
 सौपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब बिधि सुखद परम हित जानी ॥  
 उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई ॥  
 बहु बिधि सिचत सोच बिमोचन। स्ववत सलिल राजिव दल लोचन ॥  
 उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपाल देखाई ॥

सो. प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर।  
 आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महुँ बीर रस ॥ ६१ ॥

हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥  
 तुरत बैद तब कीन्ह उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई ॥  
 हृदयँ लाइ प्रभु भेटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता ॥  
 कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा ॥  
 यह वृत्तांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ॥  
 व्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा ॥  
 जागा निसिचर देखिअ कैसा। मानहुँ कालु देह धरि बैसा ॥

कुंभकरन बूझा कहु भाई । काहे तव मुख रहे सुखाई ॥  
कथा कही सब तेहिं अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥  
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे । महामहा जोधा संघारे ॥  
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । भट अतिकाय अकंपन भारी ॥  
अपर महोदर आदिक बीरा । परे समर महि सब रनधीरा ॥

दो. सुनि दसकंधर बचन तब कुंभकरन बिलखान ।  
जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्याण ॥ ६२ ॥

भल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा । अब मोहि आइ जगाएहि काहा ॥  
अजहूँ तात त्यागि अभिमानी । भजहु राम होइहि कल्याणा ॥  
हैं दससीस मनुज रघुनायक । जाके हनुमान से पायक ॥  
अहह बंधु तैं कीन्ह खोटाई । प्रथमहिं मोहि न सुनाएहि आई ॥  
कीन्हहु प्रभू विरोध तेहि देवक । सिव बिरचि सुर जाके सेवक ॥  
नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा । कहतेउँ तोहि समय निरबहा ॥  
अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई । लोचन सूफल करौ मैं जाई ॥  
स्याम गात सरसीरुह लोचन । देखौं जाइ ताप त्रय मोचन ॥

दो. राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक ।  
रावन मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक ॥ ६३ ॥

महिष खाइ करि मदिरा पाना । गर्जा बज्राघात समाना ॥  
कुंभकरन दुर्मद रन रंगा । चला दुर्ग तजि सेन न संगी ॥  
देखि विभीषनु आगे आयउ । परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥  
अनुज उठाइ हृदयँ तेहि लायो । रघुपति भक्त जानि मन भायो ॥  
तात लात रावन मोहि मारा । कहत परम हित मंत्र विचारा ॥  
तेहिं गलानि रघुपति पहिं आयउँ । देखि दीन प्रभु के मन भायउँ ॥  
सुनु सुत भयउ कालबस रावन । सो कि मान अब परम सिखावन ॥  
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषन । भयहु तात निसिचर कुल भूषन ॥  
बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर । भजेहु राम सोभा सुख सागर ॥

दो. बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।  
जाहु न निज पर सूझ मोहि भयउँ कालबस बीर । ६४ ॥

बंधु बचन सुनि चला विभीषन । आयउ जहूँ त्रैलोक विभूषन ॥  
नाथ भूधराकार सरीरा । कुंभकरन आवत रनधीरा ॥  
एतना कपिन्ह सुना जब काना । किलकिलाइ धाए बलवाना ॥  
लिए उठाइ बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ॥  
कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा । करहिं भालु कपि एक एक बारा ॥  
मुर् यो न मन तनु टर् यो न टार् यो । जिमि गज अर्क फलनि को मायौ ॥  
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । पर यो धरनि व्याकुल सिर धुन्यो ॥  
पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता । घुर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥  
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि । जहूँ तहूँ पटक पटक भट डारेसि ॥  
चली बलीमुख सेन पराई । अति भय त्रसित न कोउ समुहाई ॥

दो. अंगदादि कपि मुरुछित करि समेत सुग्रीव ।

काँस दाबि कपिराज कहूँ चला अमित बल सीव ॥ ६५ ॥

उमा करत रघुपति नरलीला । खेलत गरुड़ जिमि अहिगन मीला ॥  
भृकुटि भंग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥  
जग पावनि कीरति बिस्तरिहहिं । गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं ॥  
मुरुछा गइ मारुतसुत जागा । सुग्रीवहि तब खोजन लागा ॥  
सुग्रीवहु कै मुरुछा बीती । निबुक गयउ तेहि मृतक प्रतीती ॥  
काटेसि दसन नासिका काना । गरजि अकास चलउ तेहिं जाना ॥  
गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । अति लाघवँ उठि पुनि तेहि मारा ॥  
पुनि आयसु प्रभु पहिं बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना ॥  
नाक कान काटे जियँ जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥  
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥

दो. जय जय जय रघुबंस मनि धाए कपि दै हूह ।  
एकहि बार तासु पर छाड़ेन्हि गिरि तरु जूह ॥ ६६ ॥

कुंभकरन रन रंग बिरुद्धा । सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥  
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । जनु टीड़ी गिरि गुहाँ समाई ॥  
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा । कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥  
मुख नासा श्रवनन्हि की बाटा । निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा ॥  
रन मद मत्त निसाचर दर्पा । बिस्व ग्रसिहि जनु एहि विधि अपा ॥  
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥  
कुंभकरन कपि फौज बिडारी । सुनि धाई रजनीचर धारी ॥  
देखि राम बिकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दो. सुनु सुग्रीव विभीषन अनुज सँभारेहु सैन ।  
मैं देखउँ खल बल दलहि बोले राजिवनैन ॥ ६७ ॥

कर सारंग साजि कटि भाथा । अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥  
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टँकोरा । रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥  
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा । कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥  
जहूँ तहूँ चले विपुल नाराचा । लगे कटन भट बिकट पिसाचा ॥  
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक बीर होहिं सत खंडा ॥  
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं । उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं ॥  
लागत वान जलद जिमि गाजहीं । बहुतक देखी कठिन सर भाजहिं ॥  
रंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं । धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं ॥

दो. छन महुँ प्रभु के सायकन्हि काटे बिकट पिसाच ।  
पुनि रघुबीर निषंग महुँ प्रबिसे सब नाराच ॥ ६८ ॥

कुंभकरन मन दीख बिचारी । हति धन माझ निसाचर धारी ॥  
भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । कियो मृगनायक नाद गँभीरा ॥  
कोपि महीधर लेइ उपारी । डारइ जहूँ मर्कट भट भारी ॥  
आवत देखि सैल प्रभु भारे । सरन्हि काटि रज सम करि डारे ॥  
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाँड़े अति कराल बहु सायक ॥  
तनु महुँ प्रबिसि निसरि सर जाहीं । जिमि दामिनि घन माझ समाहीं ॥

सोनित स्ववत सोह तन कारे । जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे ॥  
विकल बिलोकि भालु कपि धाए । बिहँसा जबहिं निकट कपि आए ॥

दो. महानाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीस ।  
महि पटकइ गजराज इव सपथ करइ दससीस ॥ ६९ ॥

भागे भालु बलीमुख जूथा । बृकु बिलोकि जिमि मेष बरूथा ॥  
चले भागि कपि भालु भवानी । विकल पुकारत आरत बानी ॥  
यह निसिचर दुकाल सम अहई । कपिकुल देस परन अब चहई ॥  
कृपा बारिधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रनतारति हारी ॥  
सकरुन बचन सुनत भगवाना । चले सुधारि सरासन बाना ॥  
राम सेन निज पाछैं घाली । चले सकोप महा बलसाली ॥  
खैचि धनुष सर सत संधाने । छूटे तीर सरीर समाने ॥  
लागत सर धावा रिस भरा । कुधर डगमगत डोलति धरा ॥  
लीन्ह एक तेहिं सैल उपाटी । रघुकुल तिलक भुजा सोइ काटी ॥  
धावा बाम बाहु गिरि धारी । प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी ॥  
काटें भुजा सोह खल कैसा । पच्छहीन मंदर गिरि जैसा ॥  
उग्र बिलोकनि प्रभुहिं बिलोका । ग्रसन चहत मानहुँ त्रेलोका ॥

दो. करि चिक्कार घोर अति धावा बदन पसारि ।  
गगन सिद्ध सुर त्रासित हा हा हेति पुकारि ॥ ७० ॥

सभय देव करुनानिधि जान्यो । श्रवन प्रजंत सरासनु तान्यो ॥  
बिसिख निकर निसिचर मुख भरेऊ । तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥  
सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा । काल त्रोन सजीव जनु आवा ॥  
तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा । धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा ॥  
सो सिर परेउ दसानन आगें । विकल भयउ जिमि फनि मनि त्यागें ॥  
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा ॥  
परे भूमि जिमि नभ तें भूधर । हेठ दाबि कपि भालु निसाचर ॥  
तासु तेज प्रभु बदन समाना । सुर मुनि सबहिं अचंभव माना ॥  
सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं । अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं ॥  
करि बिनती सुर सकल सिधाए । तेही समय देवरिषि आए ॥  
गगनोपरि हरि गुन गन गाए । रुचिर बीररस प्रभु मन भाए ॥  
बेगि हतहु खल कहि मुनि गए । राम समर महि सोभत भाए ॥

छं. संग्राम भूमि बिराज रघुपति अतुल बल कोसल धनी ।  
श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी ॥  
भुज जुगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहु दिसि बने ।  
कह दास तुलसी कहि न सक छबि सेष जेहि आनन घने ॥

दो. निसिचर अधम मलाकर ताहि दीन्ह निज धाम ।  
गिरिजा ते नर मंदमति जे न भजहिं श्रीराम ॥ ७१ ॥

दिन कें अंत फिरी दोउ अनी । समर भई सुभटन्ह श्रम घनी ॥  
राम कृपाँ कपि दल बल बाढ़ा । जिमि तून पाइ लाग अति डाढ़ा ॥  
छीजहिं निसिचर दिनु अरु राती । निज मुख कहें सुकृत जेहि भाँती ॥

बहु बिलाप दसकंधर करई । बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई ॥  
रोवहिं नारि हृदय हति पानी । तासु तेज बल बिपुल बखानी ॥  
मेघनाद तेहि अवसर आयउ । कहि बहु कथा पिता समुझायउ ॥  
देखेहु कालि मोरि मनुसाई । अबहिं बहुत का करौ बड़ाई ॥  
इष्टदेव सैं बल रथ पायउँ । सो बल तात न तोहि देखायउँ ॥  
एहि विधि जल्पत भयउ बिहाना । चहुँ दुआर लागे कपि नाना ॥  
इत कपि भालु काल सम बीरा । उत रजनीचर अति रनधीरा ॥  
लरहिं सुभट निज निज जय हेतू । बरनि न जाइ समर खगकेतू ॥

दो. मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गयउ अकास ॥  
गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपि कटकहि त्रास ॥ ७२ ॥

सक्ति सूल तरवारि कृपाना । अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना ॥  
डारह परसु परिघ पाषाणा । लागेउ वृष्टि करै बहु बाना ॥  
दस दिसि रहे बान नभ छाई । मानहुँ मघा मेघ झरि लाई ॥  
धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना । जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥  
गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं । देखहि तेहि न दुखित फिरि आवहिं ॥  
अवघट घाट बाट गिरि कंदर । माया बल कीन्हेसि सर पंजर ॥  
जाहिं कहाँ ब्याकुल भए बंदर । सुरपति बंदि परे जनु मंदर ॥  
मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हेसि विकल सकल बलसीला ॥  
पुनि लच्छिमन सुग्रीव विभीषन । सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जर तन ॥  
पुनि रघुपति सैं जूझे लागा । सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा ॥  
ब्याल पास बस भए खरारी । स्वबस अनंत एक अबिकारी ॥  
नट इव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥  
रन सोभा लगि प्रभुहिं बंधायो । नागपास देवन्ह भय पायो ॥

दो. गिरिजा जासु नाम जपि मुनि काटहिं भव पास ।  
सो कि बंध तर आवइ ब्यापक बिस्व निवास ॥ ७३ ॥

चरित राम के सगुन भवानी । तर्कि न जाहिं बुद्धि बल बानी ॥  
अस बिचारि जे तग्य बिरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ॥  
ब्याकुल कटकु कीन्ह घननादा । पुनि भा प्रगट कहइ दुर्बादा ॥  
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा । सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा ॥  
बूढ़ जानि सठ छाँड़ै तोही । लागेसि अधम पचारै मोही ॥  
अस कहि तरल त्रिसूल चलायो । जामवंत कर गहि सोइ धायो ॥  
मारिसि मेघनाद कै छाती । परा भूमि घुर्मित सुरघाती ॥  
पुनि रिसान गहि चरन फिरायौ । महि पछारि निज बल देखरायो ॥  
वर प्रसाद सो मरइ न मारा । तब गहि पद लंका पर डारा ॥  
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो । राम समीप सपदि सो आयो ॥

दो. खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ ।  
माया बिगत भए सब हरषे बानर जूथ ॥ ७४ (क) ॥

गहि गिरि पादप उपल नख धाए कीस रिसाइ ।  
चले तमीचर विकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ ७४ (ख) ॥

मेघनाद के मुरच्छा जागी। पितहि बिलोकि लाज अति लागी ॥  
 तुरत गयउ गिरिबर कंदरा। करौ अजय मख अस मन धरा ॥  
 इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा। सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥  
 मेघनाद मख करइ अपावन। खल मायावी देव सतावन ॥  
 जौ प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि। नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि ॥  
 सुनि रघुपति अतिसय सुख माना। बोले अंगदादि कपि नाना ॥  
 लछिमन संग जाहु सब भाई। करहु बिधंस जग्य कर जाई ॥  
 तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही। देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥  
 मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहिं छीजै निसिचर सुनु भाई ॥  
 जामवंत सुग्रीव बिभीषन। सेन समेत रहेहु तीनिउ जन ॥  
 जब रघुबीर दीन्ह अनुसासन। कटि निषंग कसि साजि सरासन ॥  
 प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा। बोले घन इव गिरा गँभीरा ॥  
 जौ तेहि आजु बधे बिनु आवौ। तौ रघुपति सेवक न कहावौ ॥  
 जौ सत संकर करहिं सहाई। तदपि हतउ रघुबीर दोहाई ॥

दो. रघुपति चरन नाइ सिरु चलेउ तुरंत अनंत।  
 अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥  
 कीन्ह कपिन्ह सब जग्य बिधंसा। जब न उठइ तब करहिं प्रसंसा ॥  
 तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई। लातन्हि हति हति चले पराई ॥  
 लै त्रिसुल धावा कपि भागे। आए जहँ रामानुज आगे ॥  
 आवा परम क्रोध कर मारा। गर्ज घोर रव बारहिं बारा ॥  
 कोपि मरुतसुत अंगद धाए। हति त्रिसुल उर धरनि गिराए ॥  
 प्रभु कहँ छाँड़िसि सूल प्रचंडा। सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥  
 उठि बहोरि मारुति जुबराजा। हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा ॥  
 फिरे बीर रिपु मरइ न मारा। तब धावा करि घोर चिकारा ॥  
 आवत देखि क्रुद्ध जनु काला। लछिमन छाड़े बिसिख कराला ॥  
 देखेसि आवत पवि सम बाना। तुरत भयउ खल अंतरधाना ॥  
 बिबिध बेष धरि करइ लराई। कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥  
 देखि अजय रिपु डरपे कीसा। परम क्रुद्ध तब भयउ अहीसा ॥  
 लछिमन मन अस मंत्र दूढावा। एहि पापिहि मै बहुत खेलावा ॥  
 सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा। सर संधान कीन्ह करि दापा ॥  
 छाड़ा बान माझ उर लागा। मरती बार कपटु सब त्यागा ॥

दो. रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाँड़िसि प्रान।  
 धन्य धन्य तव जननी कह अंगद हनुमान ॥ ७६ ॥

बिनु प्रयास हनुमान उठायो। लंका द्वार राखि पुनि आयो ॥  
 तासु मरन सुनि सुर गंधर्वा। चढ़ि विमान आए नभ सर्वा ॥  
 बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं। श्रीरघुनाथ बिमल जसु गावहिं ॥  
 जय अनंत जय जगदाधारा। तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा ॥  
 अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए। लछिमन कृपासिन्धु पहिं आए ॥  
 सुत बध सुना दसानन जबही। मुरुच्छित भयउ परेउ महि तबही ॥  
 मंदोदरी रुदन कर भारी। उर ताड़न बहु भौंति पुकारी ॥  
 नगर लोग सब व्याकुल सोचा। सकल कहहिं दसकंधर पोचा ॥

दो. तब दसकंठ बिबिध बिधि समुझाई सब नारि।  
 नस्वर रूप जगत सब देखहु हृदयँ बिचारि ॥ ७७ ॥

तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन। आपुन मंद कथा सुभ पावन ॥  
 पर उपदेस कुसल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥  
 निसा सिरानि भयउ भिनुसारा। लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥  
 सुभट बोलाइ दसानन बोला। रन सन्मुख जा कर मन डोला ॥  
 सो अबही बरु जाउ पराई। संजुग विमुख भएँ न भलाई ॥  
 निज भुज बल मै बयरु बढावा। देहउँ उतरु जो रिपु चढ़ि आवा ॥  
 अस कहि मरुत बेग रथ साजा। बाजे सकल जुझाऊ बाजा ॥  
 चले बीर सब अतुलित बली। जनु कज्जल कै आँधी चली ॥  
 असगुन अमित होहिं तेहि काला। गनइ न भुजबल गर्ब बिसाला ॥

छं. अति गर्ब गनइ न सगुन असगुन स्ववहिं आयुध हाथ ते।  
 भट गिरत रथ ते बाजि गज चिक्करत भाजहिं साथ ते ॥  
 गोमाय गीध कराल खर रव स्वान बोलहिं अति घने।  
 जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने ॥

दो. ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहुँ मन विश्राम।  
 भूत द्रोह रत मोहबस राम विमुख रति काम ॥ ७८ ॥

चलेउ निसाचर कटक अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥  
 बिबिध भौंति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज नाना ॥  
 चले मत्त गज जूथ घनेरे। प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे ॥  
 बरन बरद बिरदैत निकाया। समर सूर जानहिं बहु माया ॥  
 अति बिचित्र बाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेन जनु साजी ॥  
 चलत कटक दिगसिधुर डगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं ॥  
 उठी रेनु रवि गयउ छपाई। मरुत थकित बसुधा अकुलाई ॥  
 पनव निसान घोर रव बाजहिं। प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ॥  
 भेरि नफीरि बाज सहनाई। मारू राग सुभट सुखदाई ॥  
 केहरि नाद बीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष उच्चरहीं ॥  
 कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा। मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ॥  
 हौ मारिहउँ भूप द्वी भाई। अस कहि सन्मुख फौज रंगाई ॥  
 यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई। धाए करि रघुबीर दोहाई ॥

छं. धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।  
 मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर वृंद नाना बान ते ॥  
 नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं।  
 जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं ॥

दो. दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि।  
 भिरे बीर इत रामहि उत रावनहि बखानि ॥ ७९ ॥

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा ॥  
 अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥

नाथ न रथ नहिं तन पद वाना । केहि बिधि जितब बीर बलवाना ॥  
 सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहि जय होइ सो स्यंदन आना ॥  
 सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥  
 बल बिबेक दम परहित घोरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ॥  
 ईस भजनु सारथी सुजाना । बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥  
 दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा । बर बिग्यान कठिन कोदंडा ॥  
 अमल अचल मन व्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥  
 कवच अभेद बिप्र गुर पूजा । एहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥  
 सखा धर्ममय अस रथ जाके । जीतन कहै न कतहुँ रिपु ताके ॥

दो. महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर ।  
 जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥ ८०(क) ॥

सुनि प्रभु बचन बिभीषन हरषि गहे पद कंज ।  
 एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज ॥ ८०(ख) ॥

उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान ।  
 लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन ॥ ८०(ग) ॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखत रन नभ चढ़े बिमाना ॥  
 हमहु उमा रहे तेहि संगे । देखत राम चरित रन रंगा ॥  
 सुभट समर रस दुहु दिसि माते । कपि जयसील राम बल ताते ॥  
 एक एक सन भिरहिं पचारहिं । एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं ॥  
 मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं ॥  
 उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं । गहि पद अवनि पटक भट डारहिं ॥  
 निसिचर भट महि गाइहि भालू । ऊपर द्वारि देहि बहु बालू ॥  
 बीर बलिमुख जुद्ध बिरुद्धे । देखिअत बिपुल काल जनु क्रुद्धे ॥

छं. क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन स्ववत सोनित राजही ।  
 मर्दिहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजही ॥  
 मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्हि काटि लातन्हि मीजही ।  
 चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहिं खल छीजही ॥  
 धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलही ।  
 प्रह्लादपति जनु बिबिध तनु धरि समर अंगन खेलही ॥  
 धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।  
 जय राम जो तून ते कुलिस कर कुलिस ते कर तून सही ॥

दो. निज दल बिचलत देखेसि बीस भुजाँ दस चाप ।  
 रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप ॥ ८१ ॥

धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर । सन्मुख चले हूह दै बंदर ॥  
 गहि कर पादप उपल पहारा । डारेन्हि ता पर एकहिं बारा ॥  
 लागहिं सैल बज्र तन तासू । खंड खंड होइ फूटहिं आसू ॥  
 चला न अचल रहा रथ रोपी । रन दुर्मद रावन अति कोपी ॥  
 इत उत झपटि दपटि कपि जोधा । मर्दि लाग भयउ अति क्रोधा ॥  
 चले पराइ भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥

पाहि पाहि रघुबीर गोसाई । यह खल खाइ काल की नाई ॥  
 तेहि देखे कपि सकल पराने । दसहुँ चाप सायक संधाने ॥

छं. संधानि धनु सर निकर छाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं ।  
 रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदसि कहै कपि भागहीं ॥  
 भयो अति कोलाहल बिकल कपि दल भालु बोलहिं आतुरे ।  
 रघुबीर करुना सिंधु आरत बंधु जन रच्छक हरे ॥

दो. निज दल बिकल देखि कटि कसि निषंग धनु हाथ ।  
 लछिमन चले क्रुद्ध होइ नाइ राम पद माथ ॥ ८२ ॥

रे खल का मारसि कपि भालू । मोहि बिलोकु तोर मै कालू ॥  
 खोजत रहेउं तोहि सुतघाती । आजु निपाति जुड़ावउं छाती ॥  
 अस कहि छाड़ेसि बान प्रचंडा । लछिमन किए सकल सत खंडा ॥  
 कोटिन्ह आयुध रावन डारे । तिल प्रवान करि काटि निवारे ॥  
 पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा । स्यंदनु भंजि सारथी मारा ॥  
 सत सत सर मारे दस भाला । गिरि सृगन्ह जनु प्रबिसहिं ब्याला ॥  
 पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनि तल सुधि कछु नाहीं ॥  
 उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी । छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी ॥

छं. सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही ।  
 पर्यो बीर बिकल उठाव दसमुख अतुल बल महिमा रही ॥  
 ब्रह्मांड भवन बिराज जाके एक सिर जिमि रज कनी ।  
 तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवन धनी ॥

दो. देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर ।  
 आवत कपिहि हन्यो तेहिं मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥ ८३ ॥

जानु टेकि कपि भूमि न गिरा । उठा सँभारि बहुत रिस भरा ॥  
 मुठिका एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा ॥  
 मुरुछा गै बहोरि सो जागा । कपि बल बिपुल सराहन लागा ॥  
 धिग धिग मम पौरुष धिग मोही । जौ तैं जिअत रहेसि सुरद्रोही ॥  
 अस कहि लछिमन कहूँ कपि ल्यायो । देखि दसानन बिसमय पायो ॥  
 कह रघुबीर समुझु जियँ भ्राता । तुम्ह कृतांत भच्छक सुर त्राता ॥  
 सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गई गगन सो सकति कराला ॥  
 पुनि कोदंड बान गहि धाए । रिपु सन्मुख अति आतुर आए ॥

छं. आतुर बहोरि विभंजि स्यंदन सूत हति ब्याकुल कियो ।  
 गिर् यो धरनि दसकंधर बिकलतर बान सत बेध्यो हियो ॥  
 सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।  
 रघुबीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरनन्हि नयो ॥

दो. उहाँ दसानन जागि करि करै लाग कछु जग्य ।  
 राम बिरोध बिजय चह सठ हठ बस अति अग्य ॥ ८४ ॥

इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई । सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई ॥

नाथ करइ रावन एक जागा । सिद्ध भएँ नहिं मरिहि अभागा ॥  
 पठवहु नाथ बेगि भट बंदर । करहिं बिधंस आव दसकंधर ॥  
 प्रात होत प्रभु सुभट पठाए । हनुमदादि अंगद सब धाए ॥  
 कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका । पैठे रावन भवन असंका ॥  
 जग्य करत जबहीं सो देखा । सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा ॥  
 रन ते निलज भाजि गृह आवा । इहाँ आइ बक ध्यान लगावा ॥  
 अस कहि अंगद मारा लाता । चितव न सठ स्वारथ मन राता ॥

छं. नहिं चितव जब करि कोप कपि गहि दसन लातन्ह मारहीं ।  
 धरि केस नारि निकारि बाहेर तेऽतिदीन पुकारहीं ॥  
 तब उठेउ क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरन बानर डारई ।  
 एहि बीच कपिन्ह बिधंस कृत मख देखि मन महुँ हारई ॥

दो. जग्य बिधंसि कुसल कपि आए रघुपति पास ।  
 चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ त्यागि जिवन कै आस ॥ ८५ ॥

चलत होहिं अति असुभ भयंकर । बैठहिं गीध उड़ाइ सिरन्ह पर ॥  
 भयउ कालबस काहु न माना । कहैसि बजावहु जुद्ध निसाना ॥  
 चली तमीचर अनी अपारा । बहु गज रथ पदाति असवारा ॥  
 प्रभु सन्मुख धाए खल कैसें । सलभ समूह अनल कहँ जैसें ॥  
 इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही । दारुन बिपति हमहि एहिं दीन्ही ॥  
 अब जनि राम खेलावहु एही । अतिसय दुखित होति वैदेही ॥  
 देव बचन सुनि प्रभु मुसकाना । उठि रघुबीर सुधारे बाना ।  
 जटा जूट दृढ़ बाँधै माथे । सोहहिं सुमन बीच बिच गाथे ॥  
 अरुन नयन बारिद तनु स्यामा । अखिल लोक लोचनाभिरामा ॥  
 कटितट परिकर कस्यो निषंगा । कर कोदंड कठिन सारंगा ॥

छं. सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि कस्यो ।  
 भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो ॥  
 कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सर चाप कर फेरन लगे ।  
 ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे ॥

दो. सोभा देखि हरषि सुर बरषहिं सुमन अपार ।  
 जय जय जय करुनानिधि छबि बल गुन आगार ॥ ८६ ॥

एही बीच निसाचर अनी । कसमसात आई अति घनी ।  
 देखि चले सन्मुख कपि भट्टा । प्रलयकाल के जनु घन घट्टा ॥  
 बहु कृपान तरवारि चमंकहिं । जनु दहँ दिसि दामिनीं दमंकहिं ॥  
 गज रथ तुरग चिकार कठोरा । गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा ॥  
 कपि लंगूर विपुल नभ छाए । मनहुँ इंद्रधनु उए सुहाए ॥  
 उठइ धूरि मानहुँ जलधारा । बान बुंद भै वृष्टि अपारा ॥  
 दुहुँ दिसि पर्वत करहिं प्रहारा । बज्रपात जनु बारहिं बारा ॥  
 रघुपति कोपि बान झरि लाई । घायल भै निसिचर समुदाई ॥  
 लागत बान बीर चिक्करहीं । घुमिं घुमिं जहँ तहँ महि परहीं ॥  
 स्ववहिं सैल जनु निर्झर भारी । सोनित सरि कादर भयकारी ॥

छं. कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी ।  
 दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अबर्त बहति भयावनी ॥  
 जल जंतुगज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन को गने ।  
 सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दो. बीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु बह फेन ।  
 कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चेन ॥ ८७ ॥

मज्जहि भूत पिसाच बेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥  
 काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥  
 एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥  
 कहँरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥  
 खैचहिं गीध आँत तट भए । जनु बंसी खेलत चित दए ॥  
 बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥  
 जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं ॥  
 भट कपाल करताल बजावहिं । चामुंडा नाना बिधि गावहिं ॥  
 जबुक निकर कटक्कट कट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥  
 कोटिन्ह रंड मुंड विनु डोल्लहिं । सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥

छं. बोल्लहिं जो जय जय मुंड रंड प्रचंड सिर विनु धावहीं ।  
 खप्परिन्ह खग अलुज्झ जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥  
 बानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।  
 संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो. रावन हृदयँ बिचारा भा निसिचर संघार ।  
 मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौ अपार ॥ ८८ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादे देखा । उपजा उर अति छोभ बिसेषा ॥  
 सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥  
 तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥  
 चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥  
 रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ बिसेषी ॥  
 सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तब रावन माया बिस्तारी ॥  
 सो माया रघुबीरहि बाँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥  
 देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छं. बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।  
 जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे ॥  
 निज सेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसल धनी ।  
 माया हरी हरि निमिष महुँ हरषी सकल मर्कट अनी ॥

दो. बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर ।  
 द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति बीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । बिप्र चरन पंकज सिरु नावा ॥  
 तब लकेस क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥

जीतेहु जे भट संजुग माहीं । सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाही ॥  
 रावन नाम जगत जस जाना । लोकप जाके बंदीखाना ॥  
 खर दूषन बिराध तुम्ह मारा । बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा ॥  
 निसिचर निकर सुभट संघारेहु । कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥  
 आजु बयरु सबु लेउं निबाही । जौ रन भूप भाजि नहिं जाही ॥  
 आजु करउं खलु काल हवाले । परेहु कठिन रावन के पाले ॥  
 सुनि दुर्बचन कालबस जाना । बिहँसि बचन कह कृपानिधाना ॥  
 सत्य सत्य सब तव प्रभुताई । जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

छं. जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।  
 संसार महँ पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा ॥  
 एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं ।  
 एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं ॥

दो. राम बचन सुनि बिहँसा मोहि सिखावत ग्यान ।  
 बयरु करत नहिं तब डरे अब लागे प्रिय प्रान ॥ १० ॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर । कुलिस समान लाग छौंई सर ॥  
 नानाकार सिलीमुख धाए । दिसि अरु बिदिस गगन महि छाए ॥  
 पावक सर छौंईउ रघुबीरा । छन महँ जरे निसाचर तीरा ॥  
 छाड़िसि तीब्र सक्ति खिसिआई । बान संग प्रभु फेरि चलाई ॥  
 कोटिक चक्र त्रिसूल पवारै । बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥  
 निफल होहिं रावन सर कैसें । खल के सकल मनोरथ जैसें ॥  
 तब सत बान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥  
 राम कृपा करि सूत उठावा । तब प्रभु परम क्रोध कहँ पावा ॥

छं. भए क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे ।  
 कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे ॥  
 मँदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे ।  
 चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥

दो. तानेउ चाप श्रवन लागि छौंई बिसिख कराल ।  
 राम मारगन गन चले लहलहात जनु ब्याल ॥ ११ ॥

चले बान सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥  
 रथ बिभंजि हति केतु पताका । गर्जा अति अंतर बल थाका ॥  
 तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना । अस्त्र सस्त्र छौंईसि बिधि नाना ॥  
 बिफल होहिं सब उद्यम ताके । जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥  
 तब रावन दस सूल चलावा । बाजि चारि महि मारि गिरावा ॥  
 तुरग उठाइ कोपि रघुनायक । खैचि सरासन छौंई सायक ॥  
 रावन सिर सरोज बनचारी । चलि रघुबीर सिलीमुख धारी ॥  
 दस दस बान भाल दस मारे । निसरि गए चले रुधिर पनारे ॥  
 स्त्रवत रुधिर धायउ बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना ॥  
 तीस तीर रघुबीर पवारै । भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥  
 काटतहीं पुनि भए नबीने । राम बहोरि भुजा सिर छीने ॥  
 प्रभु बहु बार बाहु सिर हए । कटत झटिति पुनि नूतन भए ॥

पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । अति कौतुकी कोसलाधीसा ॥  
 रहे छाइ नभ सिर अरु बाहु । मानहुँ अमित केतु अरु राहु ॥

छं. जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्त्रवत सोनित धावहीं ।  
 रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥  
 एक एक सर सिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं ।  
 जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीं ॥

दो. जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहिं अपार ।  
 सेवत बिषय बिबधे जिमि नित नित नूतन मार ॥ १२ ॥

दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी । बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी ॥  
 गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दसहु सरासन तानी ॥  
 समर भूमि दसकंधर कोप्यो । बरषि बान रघुपति रथ तोप्यो ॥  
 दंड एक रथ देखि न परेऊ । जनु निहार महँ दिनकर दुरेऊ ॥  
 हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा । तब प्रभु कोपि कारमुक लीन्हा ॥  
 सर निवारि रिपु के सिर काटे । ते दिसि बिदिस गगन महि पाटे ॥  
 काटे सिर नभ मारग धावहिं । जय जय धुनि करि भय उपजावहिं ॥  
 कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा । कहँ रघुबीर कोसलाधीसा ॥

छं. कहँ रामु कहि सिर निकर धाए देखि मर्कट भजि चले ।  
 संधानि धनु रघुबंसमनि हँसि सरन्हि सिर बेधे भले ॥  
 सिर मालिका कर कालिका गहि वृंद वृदन्हि बहु मिली ।  
 करि रुधिर सरि मज्जनु मनहुँ संग्राम बट पूजन चली ॥

दो. पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छौंई सक्ति प्रचंड ।  
 चली बिभीषन सन्मुख मनहुँ काल कर दंड ॥ १३ ॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा । प्रनतारति भंजन पन मोरा ॥  
 तुरत बिभीषन पाछें मेला । सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥  
 लागि सक्ति मुरुछा कछु भई । प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥  
 देखि बिभीषन प्रभु श्रम पायो । गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ॥  
 रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ॥  
 सादर सिव कहँ सीस चढ़ाए । एक एक के कोटिन्ह पाए ॥  
 तेहि कारन खल अब लागि बाँच्यो । अब तव कालु सीस पर नाच्यो ॥  
 राम बिमुख सठ चहसि संपदा । अस कहि हनेसि माझ उर गदा ॥

छं. उर माझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पर् यो ।  
 दस बदन सोनित स्त्रवत पुनि संभारि धायो रिस भर् यो ॥  
 द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध बिरुद्ध एकु एकहि हने ।  
 रघुबीर बल दर्पित बिभीषनु घालि नहिं ता कहँु गने ॥

दो. उमा बिभीषनु रावनहि सन्मुख चितव कि काउ ।  
 सो अब भिरत काल ज्यो श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥ १४ ॥

देखा श्रमित बिभीषनु भारी । धायउ हनुमान गिरि धारी ॥

रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय माझ तेहि मारेसि लाता ॥  
 ठाढ़ रहा अति कंपित गाता । गयउ बिभीषनु जहँ जनत्राता ॥  
 पुनि रावन कपि हतेउ पचारी । चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी ॥  
 गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना । पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना ॥  
 लरत अकास जुगल सम जोधा । एकहि एकु हनत करि क्रोधा ॥  
 सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं । कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं ॥  
 बुधि बल निसिचर परइ न पार्यो । तब मारुत सुत प्रभु संभार्यो ॥

छं. संभारि श्रीरघुबीर धीर पचारि कपि रावनु हन्यो ।  
 महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहँ जय जय भन्यो ॥  
 हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ।  
 रन मत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज बल दलमले ॥

दो. तब रघुबीर पचारे धाए कीस प्रचंड ।  
 कपि बल प्रबल देखि तेहिं कीन्ह प्रगट पाषंड ॥ १५ ॥

अंतरधान भयउ छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥  
 रघुपति कटक भालु कपि जेते । जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते ॥  
 देखे कपिन्ह अमित दससीसा । जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा ॥  
 भागे बानर धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहि लच्छिमन रघुबीरा ॥  
 दहँ दिसि धावहिं कोटिन्ह रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥  
 डरे सकल सुर चले पराई । जय कै आस तजहु अब भाई ॥  
 सब सुर जिते एक दसकंधर । अब बहु भए तकहु गिरि कंदर ॥  
 रहे बिरंचि संभु मुनि ग्यानी । जिन्ह जिन्ह प्रभु महिमा कछु जानी ॥

छं. जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।  
 चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ॥  
 हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रन बाँकुरे ।  
 मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे ॥

दो. सुर बानर देखे बिकल हँस्यो कोसलाधीस ।  
 सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस ॥ १६ ॥

प्रभु छन महँ माया सब काटी । जिमि रबि उएँ जाहिं तम फाटी ॥  
 रावनु एकु देखि सुर हरषे । फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे ॥  
 भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकन्ह तब टेरे ॥  
 प्रभु बलु पाइ भालु कपि धाए । तरल तमकि संजुग महि आए ॥  
 अस्तुति करत देवतन्हि देखें । भयउँ एक मैं इन्ह के लेखें ॥  
 सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल । अस कहि कोपि गगन पर धायल ॥  
 हाहाकार करत सुर भागे । खलहु जाहु कहँ मोरें आगे ॥  
 देखि बिकल सुर अंगद धायो । कूदि चरन गहि भूमि गिरायो ॥

छं. गहि भूमि पार्यो लात मार्यो बालिसुत प्रभु पहिं गयो ।  
 संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो ॥  
 करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु बरषई ।  
 किए सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई ॥

दो. तब रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।  
 काटे बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप ॥ १७ ॥

सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी । भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी ॥  
 मरत न मूढ़ कटेउ भुज सीसा । धाए कोपि भालु भट कीसा ॥  
 बालितनय मारुति नल नीला । बानरराज दुबिद बलसीला ॥  
 बिटप महीधर करहिं प्रहारा । सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा ॥  
 एक नखन्हि रिपु बपुष बिदारी । भागि चलहिं एक लातन्ह मारी ॥  
 तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गयऊ । नखन्हि लिलार बिदारत भयऊ ॥  
 रुधिर देखि बिषाद उर भारी । तिन्हहि धरन कहँ भुजा पसारी ॥  
 गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । जनु जुग मधुप कमल बन चरहीं ॥  
 कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी । महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥  
 पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे । सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे ॥  
 हनुमदादि मुरुच्छित करि बंदर । पाइ प्रदोष हरष दसकंधर ॥  
 मुरुच्छित देखि सकल कपि बीरा । जामवंत धायउ रनधीरा ॥  
 संग भालु भूधर तरु धारी । मारन लगे पचारि पचारी ॥  
 भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना । गहि पद महि पटकइ भट नाना ॥  
 देखि भालुपति निज दल घाता । कोपि माझ उर मारेसि लाता ॥

छं. उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ ते महि परा ।  
 गहि भालु बीसहुँ कर मनहुँ कमलन्हि बसे निसि मधुकरा ॥  
 मुरुच्छित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो ।  
 निसि जानि स्पंदन घालि तेहि तब सूत जतनु करत भयो ॥

दो. मुरुच्छा बिगत भालु कपि सब आए प्रभु पास ।  
 निसिचर सकल रावनहि घेरि रहे अति त्रास ॥ १८ ॥

मासपारायण, छुब्बीसवाँ विश्राम

तेही निसि सीता पहिं जाई । त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥  
 सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी । सीता उर भइ त्रास घनेरी ॥  
 मुख मलीन उपजी मन चिंता । त्रिजटा सन बोली तब सीता ॥  
 होइहि कहा कहसि किन माता । केहि बिधि मरिहि बिस्व दुखदाता ॥  
 रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई । बिधि बिपरीत चरित सब करई ॥  
 मोर अभाग्य जिआवत ओही । जेहिं हौ हरि पद कमल बिछोही ॥  
 जेहिं कृत कपट कनक मृग झूठा । अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥  
 जेहिं बिधि मोहि दुख दुसह सहाए । लच्छिमन कहँ कटु बचन कहाए ॥  
 रघुपति बिरह सविष सर भारी । तकि तकि मार बार बहु मारी ॥  
 ऐसेहुँ दुख जो राख मम प्राना । सोइ बिधि ताहि जिआव न आना ॥  
 बहु बिधि कर बिलाप जानकी । करि करि सुरति कृपानिधान की ॥  
 कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी । उर सर लागत मरइ सुरारी ॥  
 प्रभु ताते उर हतइ न तेही । एहि के हृदयँ बसति बैदेही ॥

छं. एहि के हृदयँ बस जानकी जानकी उर मम बास है ।  
 मम उदर भुअन अनेक लागत बान सब कर नास है ॥  
 सुनि बचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटाँ कहा ।

अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा ॥

दो. काटत सिर होइहि बिकल छुटि जाइहि तव ध्यान ।  
तब रावनहि हृदय महुँ मरिहहिं रामु सुजान ॥ १९ ॥

अस कहि बहुत भाँति समुझाई । पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई ॥  
राम सुभाउ सुमिरि बैदेही । उपजी बिरह बिधा अति तेही ॥  
निसिहि ससिहि निंदति बहु भाँती । जुग सम भई सिराति न राती ॥  
करति बिलाप मनहिं मन भारी । राम बिरहँ जानकी दुखारी ॥  
जब अति भयउ बिरह उर दाहू । फरकेउ बाम नयन अरु बाहू ॥  
सगुन बिचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहिं कृपाल रघुबीरा ॥  
इहाँ अर्धनिसि रावनु जागा । निज सारथि सन खीझन लागा ॥  
सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही । धिग धिग अधम मंदमति तोही ॥  
तेहिं पद गहि बहु बिधि समुझावा । भौरु भएँ रथ चढ़ि पुनि धावा ॥  
सुनि आगवनु दसानन केरा । कपि दल खरभर भयउ घनेरा ॥  
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी । धाए कटकटाइ भट भारी ॥

छं. धाए जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा ।  
अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥  
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावनु लियो ।  
चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि विदारि तनु व्याकुल कियो ॥

दो. देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार ।  
अंतरहित होइ निमिष महुँ कृत माया बिस्तार ॥ १०० ॥

छं. जब कीन्ह तेहिं पाषंड । भए प्रगट जंतु प्रचंड ॥  
बेताल भूत पिसाच । कर धरें धनु नाराच ॥ १ ॥

जोगिनि गहें करबाल । एक हाथ मनुज कपाल ॥  
करि सद्य सोनित पान । नाचहिं करहिं बहु गान ॥ २ ॥

धरु मारु बोलहिं घोर । रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥  
मुख बाइ धावहिं खान । तब लगे कीस परान ॥ ३ ॥

जहँ जाहिं मर्कट भागि । तहँ बरत देखहिं आगि ॥  
भए बिकल बानर भालु । पुनि लाग बरषै बालु ॥ ४ ॥

जहँ तहँ थकित करि कीस । गर्जेउ बहुरि दससीस ॥  
लच्छिमन कपीस समेत । भए सकल बीर अचेत ॥ ५ ॥

हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥  
एहि बिधि सकल बल तोरि । तेहिं कीन्ह कपट बहोरि ॥ ६ ॥

प्रगटेसि बिपुल हनुमान । धाए गहे पाषान ॥  
तिन्ह रामु घेरे जाइ । चहुँ दिसि बरुथ बनाइ ॥ ७ ॥

मारहु धरहु जनि जाइ । कटकटहिं पूँछ उठाइ ॥  
दहँ दिसि लँगूर बिराज । तेहिं मध्य कोसलराज ॥ ८ ॥

छं. तेहिं मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही ।  
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही ॥  
प्रभु देखि हरष विषाद उर सुर बदत जय जय जय करी ।  
रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महुँ माया हरी ॥ १ ॥

माया बिगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे ।  
सर निकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे ॥  
श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।  
सत शेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥ २ ॥

दो. ताके गुन गन कछु कहे जड़मति तुलसीदास ।  
जिमि निज बल अनुरूप ते माछी उड़इ अकास ॥ १०१(क) ॥

काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस ।  
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि व्याकुल देखि कलेस ॥ १०१(ख) ॥

काटत बढ़हिं सीस समुदाई । जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥  
मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा । राम बिभीषन तन तब देखा ॥  
उमा काल मर जाकी ईछा । सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ॥  
सुनु सरबग्य चराचर नायक । प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक ॥  
नाभिकुंड पियूष बस याके । नाथ जिअत रावनु बल ताके ॥  
सुनत बिभीषन बचन कृपाला । हरषि गहे कर बान कराला ॥  
असुभ होन लागे तब नाना । रोवहिं खर सूकाल बहु स्वाना ॥  
बोलहि खग जग आरति हेतू । प्रगट भए नभ जहँ तहँ केतू ॥  
दस दिसि दाह होन अति लागा । भयउ परब विनु रबि उपरागा ॥  
मंदोदरि उर कंपति भारी । प्रतिमा स्ववहिं नयन मग बारी ॥

छं. प्रतिमा रुदहिं पबिपात नभ अति बात बह डोलति मही ।  
बरषहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अति सक को कही ॥  
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहि जय जए ।  
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भए ॥

दो. खैचि सरासन श्रवन लागि छाड़े सर एकतीस ।  
रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस ॥ १०२ ॥

सायक एक नाभि सर सोषा । अपर लगे भुज सिर करि रोषा ॥  
लै सिर बाहु चले नाराचा । सिर भुज हीन रंड महि नाचा ॥  
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा ॥  
गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहाँ रामु रन हती पचारी ॥  
डोली भूमि गिरत दसकंधर । छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर ॥

धरनि परेउ द्वौ खंड बढ़ाई । चापि भालु मर्कट समुदाई ॥  
 मंदोदरि आगें भुज सीसा । धरि सर चले जहाँ जगदीसा ॥  
 प्रविसे सब निषंग महु जाई । देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ॥  
 तासु तेज समान प्रभु आनन । हरषे देखि संभु चतुरानन ॥  
 जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा । जय रघुवीर प्रबल भुजदंडा ॥  
 बरषहि सुमन देव मुनि वृंदा । जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥

छं. जय कृपा कंद मुकंद द्वंद हरन सरन सुखप्रद प्रभो ।  
 खल दल बिदारन परम कारन कारुनीक सदा बिभो ॥  
 सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही ।  
 संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही ॥  
 सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजही ।  
 जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजही ॥  
 भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर कन तन अति बने ।  
 जनु रायमुनीं तमाल पर बैठी बिपुल सुख आपने ॥

दो. कृपादृष्टि करि प्रभु अभय किए सुर वृंद ।  
 भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकंद ॥ १०३ ॥

पति सिर देखत मंदोदरी । मुरुच्छित्त बिकल धरनि खसि परी ॥  
 जुबति वृंद रोवत उठि धाई । तेहि उठाइ रावन पहिं आई ॥  
 पति गति देखि ते करहिं पुकारा । छूटे कच नहिं बपुष संभारा ॥  
 उर ताड़ना करहिं बिधि नाना । रोवत करहिं प्रताप बखाना ॥  
 तव बल नाथ डोल नित धरनी । तेज हीन पावक ससि तरनी ॥  
 शेष कमठ सहि सकहिं न भारा । सो तनु भूमि परेउ भरि छारा ॥  
 बरुन कुबेर सुरेस समीरा । रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा ॥  
 भुजबल जितेहु काल जम साई । आजु परेहु अनाथ की नाई ॥  
 जगत बिदित तुम्हारी प्रभुताई । सुत परिजन बल बरनि न जाई ॥  
 राम बिमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ॥  
 तव बस बिधि प्रपंच सब नाथा । सभय दिसिप नित नावहिं माथा ॥  
 अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं । राम बिमुख यह अनुचित नाहीं ॥  
 काल बिबस पति कहा न माना । अग जग नाथु मनुज करि जाना ॥

छं. जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।  
 जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥  
 आजन्म ते परद्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं ।  
 तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दो. अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहिं आन ।  
 जोगि वृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान ॥ १०४ ॥

मंदोदरी बचन सुनि काना । सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना ॥  
 अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिबर परमारथवादी ॥  
 भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥  
 रुदन करत देखी सब नारी । गयउ बिभीषनु मन दुख भारी ॥  
 बंधु दसा बिलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा ॥

लच्छिमन तेहि बहु बिधि समुझायो । बहुरि बिभीषन प्रभु पहिं आयो ॥  
 कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका । करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥  
 कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । बिधिवत देस काल जियँ जानी ॥

दो. मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि ।  
 भवन गई रघुपति गुन गन बरनत मन माहि ॥ १०५ ॥

आइ बिभीषन पुनि सिरु नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥  
 तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत मारुति नयसीला ॥  
 सब मिलि जाहु बिभीषन साथ । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥  
 पिता बचन मैं नगर न आवउँ । आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ ॥  
 तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना । कीन्ही जाइ तिलक की रचना ॥  
 सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥  
 जोरि पानि सबही सिर नाए । सहित बिभीषन प्रभु पहिं आए ॥  
 तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे । कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे ॥

छं. किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारे रिपु हयो ।  
 पायो बिभीषन राज तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ॥  
 मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।  
 संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥

दो. प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज ।  
 बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज ॥ १०६ ॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥  
 समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥  
 तब हनुमंत नगर महुँ आए । सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥  
 बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥  
 दूरहि ते प्रनाम कपि कीन्हा । रघुपति दूत जानकीं चीन्हा ॥  
 कहहु तात प्रभु कृपानिकेता । कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥  
 सब बिधि कुसल कोसलाधीसा । मातु समर जीत्यो दससीसा ॥  
 अबिचल राजु बिभीषन पायो । सुनि कपि बचन हरष उर छायो ॥

छं. अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।  
 का देउँ तोहि त्रेलोक महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥  
 सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं ।  
 रन जीति रिपुदल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥

दो. सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत ।  
 सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥ १०७ ॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता । देखौं नयन स्याम मृदु गाता ॥  
 तब हनुमान राम पहिं जाई । जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥  
 सुनि संदेसु भानुकुलभूषन । बोलि लिए जुबराज बिभीषन ॥  
 मारुतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥  
 तुरतहिं सकल गए जहँ सीता । सेवहिं सब निसिचरीं बिनीता ॥

बेगि बिभीषण तिन्हहि सिखायो । तिन्ह बहु बिधि मज्जन करवायो ॥  
 बहु प्रकार भूषण पहिराए । सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याए ॥  
 ता पर हरषि चढ़ी बैदेही । सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥  
 बेतपानि रच्छक चहुँ पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥  
 देखन भालु कीस सब आए । रच्छक कोपि निवारन धाए ॥  
 कह रघुबीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादें आनहु ॥  
 देखहुँ कपि जननी की नाई । बिहसि कहा रघुनाथ गोसाई ॥  
 सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे । नभ ते सुरन्ह सुमन बहु बरषे ॥  
 सीता प्रथम अनल महुँ राखी । प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी ॥

दो. तेहि कारन करुनानिधि कहे कच्छक दुर्बाद ।  
 सुनत जातुधानी सब लागीं करै बिषाद ॥ १०८ ॥

प्रभु के बचन सीस धरि सीता । बोली मन क्रम बचन पुनीता ॥  
 लच्छिमन होहु धरम के नेगी । पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ॥  
 सुनि लच्छिमन सीता कै बानी । बिरह बिबेक धरम निति सानी ॥  
 लोचन सजल जोरि कर दोऊ । प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ ॥  
 देखि राम रुख लच्छिमन धाए । पावक प्रगटि काठ बहु लाए ॥  
 पावक प्रबल देखि बैदेही । हृदयँ हरष नहिं भय कछु तेही ॥  
 जौ मन बच क्रम मम उर माहीं । तजि रघुबीर आन गति नाहीं ॥  
 तौ कृसानु सब कै गति जाना । मो कहुँ होउ श्रीखंड समाना ॥

छं. श्रीखंड सम पावक प्रबेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली ।  
 जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली ॥  
 प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जरे ।  
 प्रभु चरित काहुँ न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे ॥ १ ॥

धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो ।  
 जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ॥  
 सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली ।  
 नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ॥ २ ॥

दो. बरषहिं सुमन हरषि सुन बाजहिं गगन निसान ।  
 गावहिं किंनर सुरबधू नाचहिं चढ़ी बिमान ॥ १०९ (क) ॥

जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार ।  
 देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार ॥ १०९ (ख) ॥

तब रघुपति अनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन सिरु नाई ॥  
 आए देव सदा स्वारथी । बचन कहहिं जनु परमारथी ॥  
 दीन बंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवन्ह पर दायी ॥  
 बिस्व द्रोह रत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगामी ॥  
 तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥  
 अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघसक्ति करुनामय ॥  
 मीन कमठ सूकर नरहरी । बामन परसुराम बपु धरी ॥

जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो । नाना तनु धरि तुम्हई नसायो ॥  
 यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । काम लोभ मद रत अति कोही ॥  
 अधम सिरोमनि तव पद पावा । यह हमरे मन बिसमय आवा ॥  
 हम देवता परम अधिकारी । स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी ॥  
 भव प्रवाहँ संतत हम परे । अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ॥

दो. करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि ।  
 अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि ॥ ११० ॥

छं. जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ॥  
 भव बारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ बिभो ॥  
 तन काम अनेक अनूप छवी । गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कवी ॥  
 जसु पावन रावन नाग महा । खगनाथ जथा करि कोप गहा ॥  
 जन रंजन भंजन सोक भयं । गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ॥  
 अवतार उदार अपार गुनं । महि भार बिभंजन ग्यानघनं ॥  
 अज व्यापकमेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ॥  
 रघुबंस बिभूषण दूषण हा । कृत भूप बिभीषण दीन रहा ॥  
 गुन ग्यान निधान अमान अजं । नित राम नमामि बिभुं बिरजं ॥  
 भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । खल बृंद निकंद महा कुसलं ॥  
 विनु कारन दीन दयाल हितं । छवि धाम नमामि रमा सहितं ॥  
 भव तारन कारन काज परं । मन संभव दारुन दोष हरं ॥  
 सर चाप मनोहर व्रोन धरं । जरजारुन लोचन भूपवरं ॥  
 सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममता समनं ॥  
 अनवद्य अखंड न गोचर गो । सबरूप सदा सब होइ न गो ॥  
 इति बेद बंदति न दंतकथा । रवि आतप भिन्नमभिन्न जथा ॥  
 कृतकृत्य बिभो सब बानर ए । निरखंति तवानन सादर ए ॥  
 धिग जीवन देव सरीर हरे । तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥  
 अब दीन दयाल दया करिऐ । मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ ॥  
 जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ । दुख सो सुख मानि सुखी चरिऐ ॥  
 खल खंडन मंडन रम्य छमा । पद पंकज सेवित संभु उमा ॥  
 नृप नायक दे बरदानमिदं । चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं ॥

दो. बिनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात ।  
 सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात ॥ १११ ॥

तेहि अवसर दसरथ तहँ आए । तनय बिलोकि नयन जल छाए ॥  
 अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । आसिरबाद पितौं तब दीन्हा ॥  
 तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ । जीत्यो अजय निसाचर राऊ ॥  
 सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी । नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥  
 रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितइ पितहि दीन्हेउ दृढ़ ग्याना ॥  
 ताते उमा मोच्छ नहिं पायो । दसरथ भेद भगति मन लायो ॥  
 सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं । तिन्ह कहुँ राम भगति निज देहीं ॥  
 बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गए सुरधामा ॥

दो. अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस ।

सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस ॥११२॥

छं. जय राम सोभा धाम । दायक प्रनत विश्राम ॥  
धृत त्रोन बर सर चाप । भुजदंड प्रबल प्रताप ॥ १ ॥

जय दूषनारि खरारि । मर्दन निसाचर धारि ॥  
यह दुष्ट मारेउ नाथ । भए देव सकल सनाथ ॥ २ ॥

जय हरन धरनी भार । महिमा उदार अपार ॥  
जय रावनारि कृपाल । किए जातुधान बिहाल ॥ ३ ॥

लंकैस अति बल गर्ब । किए बस्य सुर गंधर्व ॥  
मुनि सिद्ध नर खग नाग । हठि पंथ सब कें लाग ॥ ४ ॥

परद्रोह रत अति दुष्ट । पायो सो फलु पापिष्ट ॥  
अब सुनहु दीन दयाल । राजीव नयन बिसाल ॥ ५ ॥

मोहि रहा अति अभिमान । नहिं कोउ मोहि समान ॥  
अब देखि प्रभु पद कंज । गत मान प्रद दुख पुंज ॥ ६ ॥

कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अब्यक्त जेहि श्रुति गाव ॥  
मोहि भाव कोसल भूप । श्रीराम सगुन सरूप ॥ ७ ॥

बैदेहि अनुज समेत । मम हृदयँ करहु निकेत ॥  
मोहि जानिए निज दास । दे भक्ति रमानिवास ॥ ८ ॥

दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं ।  
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥  
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलितबलं ।  
ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करुना कोमलं ॥

दो. अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल ।  
काह करौ सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल ॥११३॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । परे भूमि निसचरन्हि जे मारे ॥  
मम हित लागि तजे इन्ह प्राणा । सकल जिआउ सुरेस सुजाना ॥  
सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी । अति अगाध जानहिं मुनि ग्यानी ॥  
प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई । केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥  
सुधा बरषि कपि भालु जिआए । हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए ॥  
सुधावृष्टि भै दुहु दल ऊपर । जिए भालु कपि नहिं रजनीचर ॥  
रामाकार भए तिन्ह के मन । मुक्त भए छूटे भव बंधन ॥  
सुर असिक सब कपि अरु रीछा । जिए सकल रघुपति की ईछा ॥  
राम सरिस को दीन हितकारी । कीन्हे मुकुत निसाचर झारी ॥  
खल मल धाम काम रत रावन । गति पाई जो मुनिबर पाव न ॥

दो. सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान ।  
देखि सुअवसरु प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान ॥११४(क)॥

परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि ।  
पुलकित तन गदगद गिराँ बिनय करत त्रिपुरारि ॥११४(ख)॥

छं. मामभिरक्षय रघुकुल नायक । धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥  
मोह महा धन पटल प्रभंजन । संसय बिपिन अनल सुर रंजन ॥ १ ॥

अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ॥  
काम क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जन मन कानन ॥ २ ॥

बिषय मनोरथ पुंज कंज बन । प्रबल तुषार उदार पार मन ॥  
भव बारिधि मंदर परमं दर । बारय तारय संसृति दुस्तर ॥ ३ ॥

स्याम गात राजीव बिलोचन । दीन बंधु प्रनतारति मोचन ॥  
अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहु राम नृप मम उर अंतर ॥ ४ ॥

मुनि रंजन महि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन ॥ ५ ॥

दो. नाथ जबहिं कोसलपुरी होइहि तिलक तुम्हार ।  
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार ॥११५॥

करि बिनती जब संभु सिधाए । तब प्रभु निकट बिभीषनु आए ॥  
नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी । बिनय सुनहु प्रभु सारंगपानी ॥  
सकुल सदल प्रभु रावन मारु यो । पावन जस त्रिभुवन बिस्तारु यो ॥  
दीन मलीन हीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥  
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे । मज्जनु करिअ समर श्रम छीजे ॥  
देखि कोस मंदिर संपदा । देहु कृपाल कपिन्ह कहूँ मुदा ॥  
सब विधि नाथ मोहि अपनाइअ । पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइअ ॥  
सुनत बचन मृदु दीनदयाला । सजल भए द्वौ नयन बिसाला ॥

दो. तोर कोस गृह मोर सब सत्य बचन सुनु भ्रात ।  
भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात ॥११६(क)॥

तापस बेष गात कृस जपत निरंतर मोहि ।  
देखौं बेगि सो जतनु करु सखा निहोरउँ तोहि ॥११६(ख)॥

बीतें अवधि जाउँ जौ जिअत न पावउँ बीर ।  
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर ॥११६(ग)॥

करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं ।  
पुनि मम धाम पाइहेहु जहाँ संत सब जाहिं ॥११६(घ)॥

सुनत विभीषन बचन राम के । हरषि गहे पद कृपाधाम के ॥  
 बानर भालु सकल हरषाने । गहि प्रभु पद गुन बिमल बखाने ॥  
 बहुरि विभीषन भवन सिधायो । मनि गन बसन बिमान भरायो ॥  
 लै पुष्पक प्रभु आगें राखा । हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा ॥  
 चढ़ि बिमान सुनु सखा विभीषन । गगन जाइ बरषहु पट भूषन ॥  
 नभ पर जाइ विभीषन तबही । बरषि दिए मनि अंबर सबही ॥  
 जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं । मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ॥  
 हँसे रामु श्री अनुज समेता । परम कौतुकी कृपा निकेता ॥

दो. मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह बेद ।  
 कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद ॥ ११७(क) ॥

उमा जोग जप दान तप नाना मख ब्रत नेम ।  
 राम कृपा नहि करहिं तसि जसि निष्केवल प्रेम ॥ ११७(ख) ॥

भालु कपिन्ह पट भूषन पाए । पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए ॥  
 नाना जिनस देखि सब कीसा । पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥  
 चितइ सबन्हि पर कीन्हि दायी । बोले मृदुल बचन रघुराया ॥  
 तुम्हें बल मैं रावनु मारु यो । तिलक विभीषन कहूँ पुनि सारु यो ॥  
 निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहूँ । सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहूँ ॥  
 सुनत बचन प्रेमाकुल बानर । जोरि पानि बोले सब सादर ॥  
 प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा । हमरे होत बचन सुनि मोहा ॥  
 दीन जानि कपि किए सनाथा । तुम्ह त्रेलोक ईस रघुनाथा ॥  
 सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं । मसक कहूँ खगपति हित करहीं ॥  
 देखि राम रुख बानर रीछा । प्रेम मगन नहिं गृह कै ईछा ॥

दो. प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि ।  
 हरष विषाद सहित चले बिनय विविध विधि भाषि ॥ ११८(क) ॥

कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान ।  
 सहित विभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान ॥ ११८(ख) ॥

दो. कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि ।  
 सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि ॥ ११८(ग) ॥

अतिसय प्रीति देख रघुराई । लिन्हे सकल बिमान चढ़ाई ॥  
 मन महुँ बिप्र चरन सिरु नायो । उत्तर दिसिहि बिमान चलायो ॥  
 चलत बिमान कोलाहल होई । जय रघुबीर कहइ सबु कोई ॥  
 सिंहासन अति उच्च मनोहर । श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ॥  
 राजत रामु सहित भामिनी । मेरु संगु जनु घन दामिनी ॥  
 रुचिर बिमानु चलेउ अति आतुर । कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर ॥  
 परम सुखद चलि त्रिविध बयारी । सागर सर सरि निर्मल बारी ॥  
 सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ॥  
 कह रघुबीर देखु रन सीता । लच्छिमन इहाँ हत्यो इंद्रजीता ॥

हनूमान अंगद के मारे । रन महि परे निसाचर भारे ॥  
 कुंभकरन रावन द्वौ भाई । इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ॥

दो. इहाँ सेतु बाँध्यो अरु थापेउँ सिव सुख धाम ।  
 सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥ ११९(क) ॥

जहाँ जहाँ कृपासिंधु बन कीन्ह बास विश्राम ।  
 सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम ॥ ११९(ख) ॥

तुरत बिमान तहाँ चलि आवा । दंडक बन जहाँ परम सुहावा ॥  
 कुंभजादि मुनिनायक नाना । गए रामु सब कें अस्थाना ॥  
 सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा । चित्रकूट आए जगदीसा ॥  
 तहाँ करि मुनिन्ह केर संतोषा । चला बिमानु तहाँ ते चोखा ॥  
 बहुरि राम जानकिहि देखाई । जमुना कलि मल हरनि सुहाई ॥  
 पुनि देखी सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रनाम करु सीता ॥  
 तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । निरखत जन्म कोटि अघ भागा ॥  
 देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरनि सोक हरि लोक निसेनी ॥  
 पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव रोग नसावनि ॥ ।

दो. सीता सहित अवध कहुँ कीन्ह कृपाल प्रनाम ।  
 सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम ॥ १२०(क) ॥

पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी हरषित मज्जनु कीन्ह ।  
 कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहुँ दान विविध विधि दीन्ह ॥ १२०(ख) ॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटु रूप अवधपुर जाई ॥  
 भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु । समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥  
 तुरत पवनसुत गवनत भयउ । तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ॥  
 नाना विधि मुनि पूजा कीन्ही । अस्तुती करि पुनि आसिष दीन्ही ॥  
 मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी । चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी ॥  
 इहाँ निषाद सुना प्रभु आए । नाव नाव कहूँ लोग बोलाए ॥  
 सुरसरि नाधि जान तब आयो । उतरेउ तट प्रभु आयसु पायो ॥  
 तब सीताँ पूजी सुरसरी । बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ॥  
 दीन्ह असीस हरषि मन गंगा । सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥  
 सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल । आयउ निकट परम सुख संकुल ॥  
 प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही । परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही ॥  
 प्रीति परम बिलोकि रघुराई । हरषि उठाइ लियो उर लाई ॥

छं. लियो हृदयँ लाइ कृपा निधान सुजान रायँ रमापती ।  
 बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर वीनती ।  
 अब कुसल पद पंकज बिलोकि बिरंचि संकर सेब्य जे ।  
 सुख धाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ॥ १ ॥

सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ।  
 मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस विसराइयो ॥  
 यह रावनारि चरित्र पावन राम पद रतिप्रद सदा ।

कामादिहर बिग्यानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ॥ २ ॥

(लंकाकाण्ड समाप्त)

दो. समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान ।  
बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान ॥ १२१(क) ॥

Shri Ram Charit Manas by Goswami Tulasidas was encoded in ISCII by a group of volunteers at Ratlam. The files were converted to ITRANS 5.2 encoding for creating this devanagari version.

यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार ।  
श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार ॥ १२१(ख) ॥

Please contact Sri Vineet Chaitanya (vc@iiit.net) of Indian Institute of Information Technology, Hyderabad for further details.

मासपारायण, सत्ताईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने  
षष्ठः सोपानः समाप्तः ।

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)  
Last updated January 22, 2000